सितम्बर-२०२१ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०२१

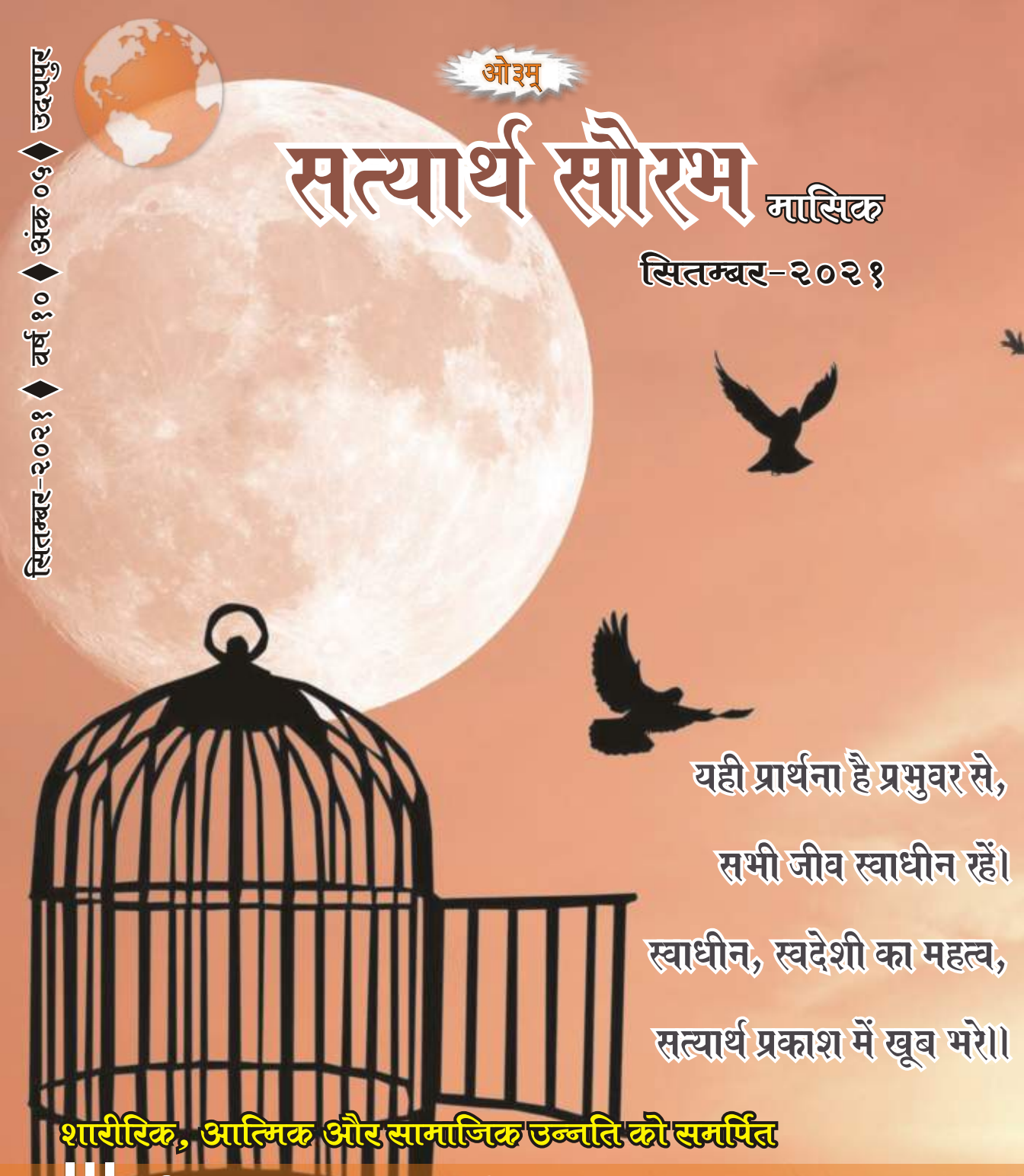

यही प्रार्थना है प्रभुवर से,
सभी जीव स्वाधीन रहें।
स्वाधीन, स्वदेशी का महत्व,
सत्यार्थ प्रकाश में खूब भरे॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ११६

हर
के व्यंजनों का आधार है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Kitchen King
Sambhar masala
Sabzi masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Shahi Paneer masala
KASOORI METHI
Chana masala
Pav Bhaji masala
Chunky Chat masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

कार्यालय मंत्री
भँवर लाल गर्ग (मो. 7976271159)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	- 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
भाद्रपद शुक्ल प्रथमा
विक्रम संवत्
२०७८
दयानन्दाब्द
१९७

September - 2021

समाचार २८

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/२१
१५	कर्म की स्वतंत्रता-एक वरदान
१६	भायाम् रत: इति भारत:
१८	इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिन्दी में
२०	वेदविज्ञान आलोक का औचित्य
२४	बाबासाहब नरगुन्दकर
२५	लाला मटोलचन्द और रामजी दास
२७	नवलखा महल हुआ हाइटेक
३०	सत्यार्थ पीयूष- योग के अंग

हलचल २९

सत्यार्थ–सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर
वर्ष - १० अंक -०५
द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

बुड्ढे ने जवान को निगला

विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥ - ऋग्वेद १०/५५/५

देखो जयी जवान को निगले बूढ़ा काल।
'प्रणव' निरन्तर सृष्टि में प्रचलित नियम विशाल।।

विवेचन

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्रभु ने अनादि काल से चले आ रहे सृष्टि के एक नियम को आश्चर्यमय ढंग से वर्णित किया है। सृष्टि का नियम है जो जन्म लेता है वह मरता अवश्य है क्योंकि जीवन-मरण, सत्य-असत्य, पुण्य-पाप, धर्म-अधर्म, आचार-अनाचार, भलाई-बुराई, सुर-असुर, आना-जाना, उठना-बैठना, रोना-हँसना, चलना-फिरना, खाना-पीना आदि कुछ शब्द द्वंदात्मक (जोड़ा) की भावना से प्रयुक्त किए जाते हैं क्योंकि इनका परस्पर अटूट सम्बन्ध होता है। इसी क्रम में जीना और मरना भी है किन्तु आश्चर्य यह है कि जवान को बुड्ढा निगल जाता है। मनीषियों ने काल को अनादि तथा अति प्राचीन माना है अतएव वह बुड्ढा है और यथासमय उत्पद्यमान मानव शरीर को जवान कहा गया है। शाश्वत नियम यह है कि काल सभी को निगलता जाता है।

महाभारत में यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में यक्ष ने युधिष्ठिर से जो प्रश्न किए हैं उनमें एक प्रश्न यह भी है कि संसार में सबसे बड़ा

आश्चर्य क्या है, अर्थात् संसार में प्रतिदिन देखा जाता है कि जन्म लेने वाले प्राणी प्रतिदिन मरते चले जा रहे हैं किन्तु बचे हुए सभी यही समझते हैं कि हम तो सदैव जीवित रहेंगे। इससे बढ़कर संसार में और आश्चर्य क्या हो सकता है! युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्न का उत्तर अत्यन्त सटीक और व्यवहारिक दिया है। मानव शैशवकाल से ही युवावस्था तक आते-आते विविध प्रकार के मनोरथ करता रहता है, विचारों में जमीन आसमान के कुलावे मिलाता रहता है किन्तु आलस्य अथवा किसी परिस्थितिवश वह निकम्मा सिवाय विचार करने के करता कुछ नहीं। ऐसा मनुष्य ध्येय प्राप्ति में सदैव असफल ही रहता है। इस प्रकार के निकम्मे लोग जो केवल विचारों के विमानों में सैर करते रहते हैं वे सदा दरिद्री, दुःखी और विपन्न ही रहते हैं।

मंत्र में संसार को युद्धक्षेत्र के नाम से पुकारा गया है। वस्तुतः संसार युद्ध क्षेत्र- कुरुक्षेत्र तो है ही, जहाँ माता के गर्भ की कोठरी से बाहर आते ही मनुष्य को विविध परिस्थितियों से जूझना पड़ता है, जिनके आधार पर कर्मठ, उद्यमी और शूरवीर जीवन संग्राम में विजयश्री का वरण करते हैं। प्रस्तुत विषय में किसी अंग्रेजी विद्वान् का चिन्तन भी द्रष्टव्य है 'दिस वर्ल्ड इज नॉट फॉर बैगर्स बट इट इज फार दोज हू स्ट्रगल, फाइट एण्ड कांकर्स' अर्थात् यह संसार भिखारियों, निकम्मों के लिए नहीं है अपितु उनके लिए है जो नित्य संघर्षरत रहते हुए जीवन की परिस्थितियों पर विजय का डंका बजाते हैं। संसार के विवेचन में उर्दू का शायर लिखता है

जिन्दगी है कशमकश, मौत है कामिल सकून।
शहर में है शोरगुल, मकबरा खामोश है।।

संघर्ष जीवन का मुख्य चिह्न है। यह परिभाषा ही सफलता का स्वर्णिम सोपान है। संघर्ष से तात्पर्य है कर्म करने की प्रवृत्ति जिसके आधार पर मनुष्य को मनुष्य या पुरुष कहलाने का प्रमाण-पत्र प्राप्त होता है। पुरुषार्थ के अभाव में पुरुष शब्द की चरितार्थता कहाँ है? परमेश्वर ने मानव शरीर में ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्म इन्द्रियों के साथ विचार करने का साधन मस्तिष्क भी दिया है। इससे ज्ञात होता है कि मनुष्य को विचारपूर्वक सदैव कर्मरत रहना चाहिए प्रस्तुत विषय में संस्कृत साहित्यकार लिखता है।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।

अर्थात् मनुष्य को उद्योग से ही कार्य में सफलता प्राप्त होती है मनोरथ से नहीं। जिस प्रकार उद्यमहीन सोते हुए सिंह के मुख्य में मृग स्वयं आकर नहीं घुसते।

एक अन्य साहित्यकार के द्वारा प्रस्तुत विषय की पुष्टि में पढ़िए-

रत्नैर्महाब्धेस्तुतुषुर्न देवाः, न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं, न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः।।

पौराणिक कल्पना के आधार पर कहैं- देवताओं ने समुद्र मंथन किया तो वे रत्नों की प्राप्ति पर प्रसन्न या संतुष्ट नहीं हुए और

न विष प्राप्ति पर भयभीत हुए और न भागे जब तक कि उन्होंने अमृत प्राप्त न कर लिया तब तक भी लगातार संघर्ष करते रहे क्योंकि धीर विवेकी मनुष्य निश्चित लक्ष्य प्राप्ति से पूर्व अपना अध्यवसाय नहीं छोड़ते।

वस्तुतः यह सम्पूर्ण विश्व ही समुद्र है। देवताओं अर्थात् दिव्य आत्माओं के द्वारा इसका मंथन निरन्तर चलता रहता है, उनके पुरुषार्थरूपी मंथन से प्रारम्भ में जब उनकी ग्रीवाओं में स्तुति प्रशंसाओं की मानो मालाएँ पहनाई जाती हैं फिर कभी-कभी सामाजिक क्षेत्र में सुधार को ले सामने विभिन्न प्रकार की बाधाएँ, निन्दाएँ, कटु वचनों की बौछारें, कटु वचनों के व्यंगबाण भी सहने पड़ते हैं, किन्तु इस प्रकार की विष ज्वालाओं से दिव्य पुरुष आकुल व्याकुल न होते हुए निश्चित ध्येय के लिए कर्म पथ पर अग्रसर होते ही रहते हैं। अन्ततोगत्वा सफलताओं की अप्सराएँ उनको वरण कर धन्य हो जाती हैं और दिगदिगन्त में उनकी विजय वैजयन्ती लहराती हुई दृष्टिगोचर होती है।

अपने सुयश की दुन्दुभी बजाने वाले ऐसे धीर वीर महापुरुष भी काल बली के द्वारा ग्रस लिए जाते हैं। इतिहास की शृंखला में अप्रतिम पौरुष के धनी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, अहंकार की सजीव प्रतिमा रावण, राजनीतिज्ञता की अंगुली पर महाभारत में विजय का गोवर्धन उठाने वाले भगवान श्रीकृष्ण, महान् बलधारी कौरव और पांडव, महात्मा बुद्ध की नास्तिकता का समूल उन्मूलन कर वैदिक धर्म का कल्पवृक्ष लगाने वाले आद्य शंकराचार्य, कूटनीति के मैदान में अपराजित योद्धा आचार्य चाणक्य, मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, अकबर को नाकों चने चबाने वाले महाराणा प्रताप, औरंगजेब की नाक में अकेले ही नकेल डालने वाले वीर शिवाजी, ब्रिटिश साम्राज्य जिनके नाम से थरथर काँपता था वे प्रोफेसर श्यामजी कृष्ण वर्मा, महावीर सावरकर, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, वीरवर सुभाष चन्द्र बोस, आधुनिक युग में वेद का नाम गुँजाने वाले ऋषि दयानन्द, राजनीतिक सितारे जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, सरदार पटेल जैसे शत-शत शूरवीर बलिदानी, ज्ञानी, ध्यानी, योगी सभी को सृष्टि का यह शाश्वत नियम निरन्तर निगलता रहा है और निगलता रहेगा। महान् विधाता का महिमामय अनन्त जगत्, अनादि महाकवि का यह सर्वोत्कृष्ट दृश्यकाव्य है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इसको निरन्तर चिन्तनपूर्वक देखता रहे, प्रचलित प्रक्रिया पर विचार करता रहे, सर्वथा निरभिमानी होकर प्रभु के समक्ष आत्मसमर्पण की भावना से शायर के शब्दों में कहता रहे-

सहारा अपनी यादों का हमारे साथ रहने दो।
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाए।।

सृष्टि के इस निरन्तर नियम के अन्तर्गत हम आए दिन देख रहे हैं कि जो कल हमारे सामने सम्मानपूर्वक कीर्ति कोकिलाओं के पंचम स्वर में मस्त होता हुआ, विजय का महोत्सव मना रहा था, धनेश्वरी की सहेलियों के साथ अठखेलियाँ कर रहा था, जो मखमली गद्दों पर भी नींद लेते हुए इतराता था, आज वह सदा सर्वदा के लिए भूमि शैया पर नितान्त शान्त भाव से सो रहा है। जिसकी मनोहारणी मधुर वाणी सहस्त्रों श्रोताओं को वक्तृत्व की शैली के जादू से अपने आकर्षण रूपी पिंजरे में बन्द कर लेती थी, आज उसकी सरस्वती मौनी अमावस्या मना रही है। नश्वर संसार में यही प्रक्रिया अनादि काल से प्रचलित है। अतः मनुष्य को चाहिए कि काल का ग्रास बनने से पूर्व ही अपने जीवन को प्रगति पथ पर उतारकर ईश्वर आज्ञा पालन करते हुए लोकोपकार के कार्यों में अधिकाधिक अभिरुचि उत्पन्न करे, ताकि उसको-

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति. सुप्रभातम्, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजालि:।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा हन्त! हन्त! नलिनींगज उज्जहार।।

अर्थात् एक भंवरा कमलपुष्प पर बैठकर इतना मस्त हुआ कि सायं समय कमल पंक्तियों में ही बन्द हो गया। वह सोच रहा है, रात्रि व्यतीत होगी, प्रभात होगा, कमल की पंखुड़ियाँ फिर खुलेंगी तो संसार की मौज मस्ती फिर लूँगा। भंवरे के इतना सोचने पर ही एक मस्त हाथी ने भ्रमर सहित कमलनाल को उदरस्थ कर लिया, तो ऐसी घटनाओं से पश्चाताप न करना पड़े। वस्तुतः प्रस्तुत मंत्र संसार की नश्वरता पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य को प्रारम्भ में ही सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होने का निर्देश दे रहा है।

बुड्ढा निगल रहा है सुन्दर जवान को,
सब देखते खड़े हैं क्यों आसमान को।
वीरों को जिसने रण में था मार कर भगाया,
जयमाल पहन कर के गौरव का गाना गाया।
वह भी बचा न पाया अस्तित्वयान को।।
संसार का नियम है कितना महत्वशाली,
हिलती बिना न इसके वृक्षों की पत्र डाली।
तत्वज्ञ जानते हैं इस संविधान को।।
कल था समर्थ पूरा गरिमा से जी रहा था,
मन के मनोरथों की चादर को सी रहा था।
निष्प्राण भूमि सोता तजकर गुमान को।।
यह काल ही है बुड्ढा प्राणी जवान जानो,
इसके समक्ष अपनी मत शान तुम बखानो।
करता यही है ढीली सब की कमान को।।

– ओंकार मिश्र प्रणव शास्त्री
साभार– वेद-वैचित्र्य

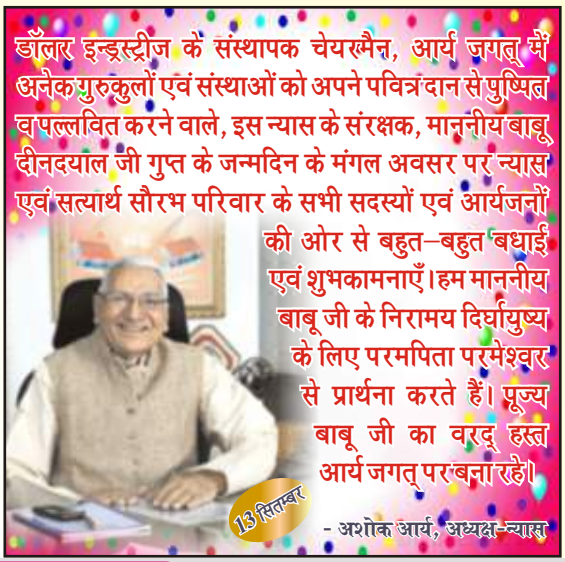

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (दशम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ज १	१	य १	■ २	२	द्या २	२	■ ३
■ ४	स ४	४	म ४	४	■ ५	स ५	५	रि ५
६ भ	६	■ ७	७	७ दे	७	■ ८	८	८ श

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. महाराज युधिष्ठिर के किस यज्ञ में भूगोल के राजा, ऋषि-महर्षि आये थे?
२. जो ब्राह्मणादि वर्णस्थ स्त्रीपुरुष रसोई बनाने, चौका देने, बर्त्तन भांडे मांजने आदि के बखेड़ों में पड़े रहैं तो किन शुभ गुणों की वृद्धि कभी नहीं हो सकती?
३. एक साथ खाना खाने में दोष है वा नहीं?
४. परमात्मा सबके मन में किसका अंकुर डाले कि जिससे मिथ्यामत शीघ्र ही प्रलय को प्राप्त हों?
५. महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में किस चीज पर खाते-पीते थे?
६. समय पर मिताहार भोजन करना क्या कहाता है?
७. जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तब तीसरा कौन आकर पंच बन बैठता है?
८. बिना देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य वा व्यापार किये किसकी उन्नति कभी नहीं हो सकती है?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर २०२१

न्यास का मोटो, सदैव से रहा है
जो कहा जाए वह किया जाए ।

सत्यार्थ प्रकाश भवन
प्रगति के पथ पर

१९९२ में नवलखा महल का अधिग्रहण हुआ और पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती इसके संस्थापक अध्यक्ष बने। मेरा सौभाग्य रहा कि १९९४ में मैं यहाँ राजकीय सेवा में स्थानान्तरित होकर आया और आने के बाद से ही स्वामी जी के आग्रह से यहाँ से जुड़ा। उस समय भवन की जो स्थिति थी वह अत्यन्त जर्जर थी और गतिविधियाँ प्रायः शून्य थी। परन्तु स्वामी जी के तेजस्वी और कर्मठ व्यक्तित्व के चलते परिस्थितियाँ बदलनी ही थीं और ऐसा ही हुआ। पूज्य स्वामी जी ने तो तन-मन-धन सर्वथा, सर्वतोभावेन अपने आपको न्यास के समर्पित कर दिया था। यहाँ तक कि उन्होंने सब कुछ छोड़ कर संन्यास ले कर यहीं पर एक छोटा सा कुटीर बनाकर उसमें रहना प्रारम्भ कर दिया। उस काल में न्यास में जो भी गतिविधियाँ की गईं उनके निर्माण और क्रियान्वयन का कार्य प्रायः हमारे और साथियों के ऊपर रहता था परन्तु इसका जो वित्तीय पक्ष था उसकी हमें तनिक भी चिन्ता न रहती थी क्योंकि स्वामी जी स्वयं सदैव अर्थ सम्बल बनके खड़े रहते थे, उनकी तपस्या की कहानी आज एक इतिहास बन गई है जो हमें प्रेरणा देती रहती है।

प्रायः देखा जाता है कि लोग घोषणाएँ तो कर देते हैं पर उन पर अमल कितना हुआ इस पर ध्यान नहीं दिया जाता, परन्तु यह स्वामी जी की ही प्रेरणा थी और हमारा भी स्वभाव था कि उतना ही कहा जाए जितना किया जा सके। इसी को केन्द्र में रखते हुए धीरे-धीरे न्यास की प्रगति होने लगी और अनेक क्षेत्रों में न्यास ने कार्य किया जिनका विशद् उल्लेख इस संक्षिप्त आलेख में सम्भव नहीं।

यहाँ केवल सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता और सत्यार्थ सौरभ पत्रिका की संक्षिप्त बात रखेंगे।

1. सत्यार्थ प्रकाश के प्रत्येक समुल्लास पर निबन्ध प्रतियोगिता की सफलता के पश्चात् न्यास ने निर्णय लिया कि विद्यालयों के विद्यार्थियों को सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं से अवगत कराने हेतु १ वर्ष में १००००० विद्यार्थियों की परीक्षा ली जाए। इसके लिए पढ़ने हेतु उनको बाल सत्यार्थ प्रकाश दिया जाए।

हमारा विचार है कि अगर वैदिक सन्देश लोगों तक पहुँचाना है तो इसके दो ही साधन हैं या तो उन्हें अपने तक बुलाओ अथवा स्वयं उनके पास पहुँच जाओ। उक्त प्रतियोगिता में हमने दूसरा प्रकार अपनाया और न्यास का वेद प्रचार रथ गाँव-गाँव घूमता रहा। यहाँ बच्चों को मुफ्त नहीं बल्कि ₹२० में पाठ्य सामग्री दी जाती रही। इसके पीछे हमारा यह भी विचार था कि जिन बच्चों को यह पाठ्य सामग्री दी जा रही है, बाल सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है उन्हें परीक्षा की दृष्टि से, क्योंकि प्रश्न पत्र ऐसा बनाया गया था कि जब तक पूरी पुस्तक न पढ़ें तब तक अच्छे नम्बर नहीं आ सकते थे, अतः बच्चों को बाल सत्यार्थ प्रकाश

पूरा पढ़ना ही पड़ेगा और अच्छे नम्बर आएँ इस भावना से अभिभावक भी पढ़ेंगे कुल मिलाकर के अनुमानित एक पुस्तक को चार लोग पढ़ेंगे ऐसा हमारा विचार था लगभग ६०००० पुस्तकें भेजी गई और इस प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश २००००० से ढ़ाई लाख लोगों तक पहुँचा।

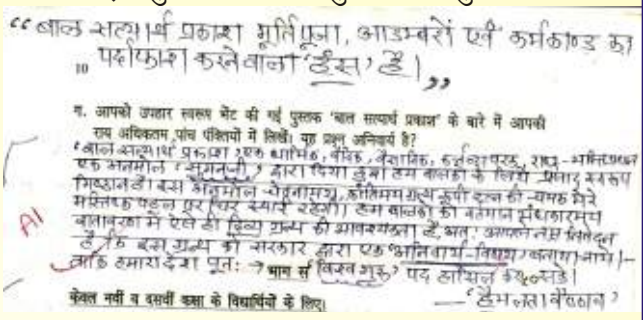

उक्त योजना में आर्य पृष्ठभूमि के विद्यालयों का समुचित सहयोग नहीं रहा, जिनके बारे में हमारा पूर्ण विश्वास था कि ये संस्थान बढ़-चढ़कर साथ देंगे, इसी कारण से हमारा संकल्प पूरा नहीं हुआ। पर यह अवश्य है कि ४०००० बच्चे इस योजना से जुड़े जिनमें ८०% ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी ही थे। बच्चों ने जो उत्तर दिए और बाल सत्यार्थ प्रकाश के बारे में जो अपने विचार लिखे वे सकारात्मक ऊर्जा से भर देने वाले थे। हम वर्षों तक अवकाश मिलने पर उन्हें पढ़कर अपने संकल्प को दृढ़ीभूत करते रहे।

2. सत्यार्थ सौरभ पत्रिका की बात करें तो वर्ष २०११ के सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर अक्टूबर में हमने घोषणा की थी कि न्यास की मासिक पत्रिका निकलेगी और अनेक कष्टदायी रजिस्ट्रेशन आदि की प्रक्रिया से गुजर कर, जनवरी २०१२ में प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। तब से अब तक परमपिता परमात्मा की कृपा से यह पत्रिका न केवल निरन्तर निकल रही है बल्कि आपके आशीर्वाद से आर्य जगत् में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी है। आर्य समाज के बाहर के भी अनेक लोग जो इसके पाठक बने उन्होंने भी इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। आर्थिक रूप से पत्रिका को संबल देने में जहाँ न्यास के ट्रस्टी बन्धुओं का अतीव योगदान है, वहीं विज्ञापन के रूप में प्रारम्भ से लेकर के अद्यतन निरन्तर अर्थ सहयोग देने में माननीय बाबू दीनदयाल जी एवं न्यास के पूर्व अध्यक्ष (स्मृति शेष) महाशय धर्मपाल जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आगे के लिए भी अत्यन्त श्रमसाध्य और समय साध्य होने के बावजूद अत्यल्प साधनों से ही हम 'सत्यार्थ सौरभ' निरन्तर निकालेंगे ऐसा संकल्प है। ११००० रु. देकर अपना संरक्षत्व प्रदान करने वाले उदारमनाओं का स्वागत है।

3. अब हम आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा की बात करें तो अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कह सकते हैं कि आर्यसमाजेतर लोगों में अपने

विचार संप्रेषण का अत्यन्त ही उपयोगी साधन हमने इसे पाया। यद्यपि अगर हम मार्केटिंग पर व्यय करने में अर्थात् एक व्यक्ति इसी के निमित्त रखने में सक्षम होते तो संख्यात्मक रूप से जो अभी लगभग ३०००० लोग प्रतिवर्ष इसे देखने आते हैं (कोरोना काल को छोड़कर) वह बढ़कर एक लाख से ऊपर हो जाते इसमें कोई सन्देह नहीं। विशेष बात यह है कि इन ३०००० लोगों में ६५% लोग ऐसे होते थे जिन्होंने इससे पूर्व वैदिक विचारों को, वैदिक मान्यताओं को विशेष सुना समझा नहीं हुआ था परन्तु उसके बावजूद दीर्घा दर्शन के पश्चात् वे जो भाव लेकर जाते थे और उनमें से कतिपय लोग पंजिका पर जो लिख कर जाते थे उसे पढ़कर मन मयूर झूम उठता था और धीरे-धीरे हमें निश्चय हो गया कि आर्यसमाजेतर लोगों को बुलाकर और ऐसे ही प्रकल्पों का निर्माण कर उन्हें गम्भीर वैदिक विचारों से संपृक्त किया जा सकता है।

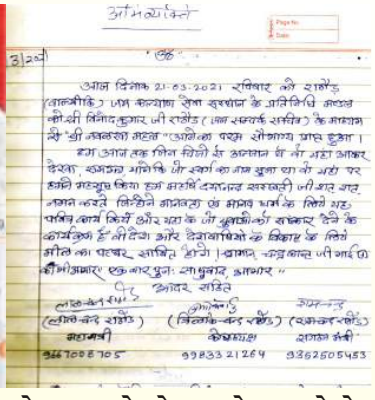

मेरी इस बात को कृपया अन्यथा न लें कि अनेक स्थलों पर करोड़ों रुपए लगाकर अनेकों कमरे इत्यादि बनाए गए परन्तु उनका उपयोग वर्ष में कितने दिन हो पाता है यह विचार करने से अपने आप स्पष्ट हो जाएगा, परन्तु अगर कोरोना काल की बात छोड़ दें तो सत्यार्थ प्रकाश भवन वह स्थल है जहाँ पर जैसा हमने पूर्व में कहा कि ३०००० लोग जो कि गैर आर्य समाजी हैं यहाँ से आर्य समाज की विचारधारा लेकर जाते हैं और यही कारण है लाखों रुपए का साहित्य प्रतिवर्ष, विशेष रुप से सत्यार्थ प्रकाश यहाँ से विक्रय हो पाता है इस सब ने यह विचार उत्पन्न किया कि काश ऐसे ही कुछ प्रकल्प और तैयार अगर इस ऋषि भूमि पर हो जाएँ तो ३० सहस्र की संख्या लाखों में निश्चित रूप से पहुँच जाएगी।

4. प्रकल्प मस्तिष्क में थे परन्तु एक तो स्थान का अभाव था दूसरे अर्थ का अभाव था। स्थान के सन्दर्भ में तो कुछ विशेष किया जा सकता नहीं था अतः विचार आया जो खुला हुआ चौक है अगर उसको एक डोम से आच्छादित कर दिया जाए तो उसके नीचे एक प्रकल्प तैयार हो सकता है। प्रभु कृपा से इसकी प्राथमिक तैयारी के लिए उदयपुर के विधायक और पूर्व गृहमंत्री माननीय गुलाब चन्द जी कटारिया ने १०.५० लाख रुपए की राशि डोम बनाने के लिए दी। जिससे डोम का बेसिक स्ट्रक्चर तैयार हो गया। इसके लिए उन्हें जितना धन्यवाद दिया जाए कम है। परन्तु जिस तरह की साज सज्जा हमारे मन में थी, जिससे दर्शकों पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़े उसके लिए अधिक धनराशि की आवश्यकता थी। महर्षि की अमर कृति संस्कार विधि

का अपेक्षाकृत कम प्रचार हुआ है जबकि मानव के चरित्र और व्यक्तित्व के निर्माण में उसका महत्त्व असंदिग्ध है। अतः इन प्रकल्पों में, १६ संस्कारों को अत्यन्त सुन्दर झाँकियों के साथ संस्कार वीथिका में प्रदर्शन के साथ-साथ ही एक थियेटर वह भी ऐसी क्वालिटी का जैसे कि सिनेमाघर होते हैं बनाने की इच्छा थी जिसमें कि सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं पर शानदार फिल्में बनाकर दिखा सकें और उदयपुर के आसपास के १५०-२०० विद्यालयों को जोड़कर प्रेरणा देकर लाखों विद्यार्थियों को वैदिक सन्देश दे सकें। इस सब के लिए प्रचुर धन की आवश्यकता थी जिसके लिए हमें हरी झंडी आर्य जगत् की विख्यात विभूति और इस ट्रस्ट के प्राण माननीय बाबू दीनदयाल जी और हमारे अग्रज तुल्य आदरणीय श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य ने प्रदान कर दी। ४० लाख रुपये का सात्विक दान इन दोनों देव पुरुषों द्वारा दिया गया।

कोरोना काल, लॉकडाउन, गुलाब बाग की प्रशासनिक व्यवस्थाओं की अड़चन, नाना प्रकार के व्यवधान आने से अत्यन्त चिन्ता थी कि यह कार्य कब पूर्ण होगा। परन्तु प्रभु की कृपा से और न्यास के सभी स्थानीय न्यासी बन्धुओं व आर्य कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से और स्मार्ट सिटी उदयपुर के अधिकारियों और नगर निगम उदयपुर के माननीय महापौर और उपमहापौर व अन्य नागरिकों की सहायता से और विशेष रूप से उक्त दोनों महानुभावों की कृपा से हमारा संकल्प पूर्ण होकर आज आपके समक्ष उपस्थित है। यह सुरेश चन्द्र दीनदयाल आर्य चलचित्रालय और दीनदयाल सुरेश चन्द्र आर्य संस्कार वीथिका परिसर कितने आकर्षक हैं और कितने प्रेरक हो सकते हैं इसका निर्णय तो आप सुधीजन करेंगे, हम तो यही कहेंगे कि हम लोगों ने अपना १००% इसमें देने का प्रयत्न किया है। चलचित्रालय में दिखाने हेतु सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं पर आधारित प्रथम फिल्म के बारे में एक स्थानीय फिल्म निदेशक से बात चल रही थी उनको पूरा प्लॉट बहुत ही उत्तम लगा था। परन्तु दुख की बात है कि कोरोना ने उनके जीवन को लील लिया। अभी के लिए वर्तमान में उपलब्ध साधनों से सहाय्य लेकर बच्चों में राष्ट्रीयता का भाव भर सकें, वैदिक शिक्षाओं का सार उनके समक्ष प्रस्तुत करें, इस प्रकार की ६ अथवा ७ लघु फिल्में हमने एकत्रित कर ली हैं। न्यास द्वारा निर्मित दयानन्द दर्शन तो है ही जिसकी भी भूरि-भूरि प्रशंसा सहस्रों लोगों ने भूतकाल में की है।

जिस प्रकार न्यास की 'आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा' विश्व प्रसिद्ध हो इस योग्य बनी है कि यहाँ के चित्रों का प्रदर्शन सैकड़ों आर्य समाजों में वर्तमान में किया जा रहा है। आर्यसमाज हापुड़ ने तो हूबहू गैलेरी बनाई है। उसी प्रकार हमें पूर्ण आशा है कि प्रभु कृपा से और आप सभी आत्मीय बन्धुओं के आशीर्वाद से थिएटर और संस्कार वीथिका विश्व भर के मानवों को वैदिक सन्देश प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

हम जैसे ही वीथिका परिसर में प्रवेश करेंगे सामने ही ऊपर महर्षि दयानन्द जी महाराज की भव्य प्रतिमा के दर्शन होंगे जो महर्षि जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने की ओर दर्शकों को प्रेरित करेगी और चित्रदीर्घा और थिएटर सहायक होंगे महर्षि जी का राष्ट्र की प्रगति में अवदान रेखांकित करने में।

5. जैसा हमने पूर्व में कहा- महर्षि दयानन्द जी महाराज की संस्कार विधि मानव जीवन के निर्माण की कुंजी है परन्तु इसका प्रचार अपेक्षाकृत कम रहा है। आर्य परिवारों में भी १-२ संस्कार होकर रह जाते हैं। कुछ संस्कार तो पूर्णतः उपेक्षित रहते हैं, जबकि उनका महत्व अन्य से कम नहीं बल्कि गुरुतर है। आर्यसमाजेतर लोग तो प्रायः संस्कारों के नाम तक नहीं जानते। ऐसे में यह संस्कार वीथिका उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम होगी, ऐसा विश्वास है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यंत १६ संस्कार लाइफसाइज स्टेचू, 3D पेंटिंग, प्रकाश का भव्य संयोजन और सारगर्भित वर्णन के साथ २० मिनट का ऐसा भव्य शो प्रस्तुत

करेंगी कि हमें विश्वास है कि लाखों लोग प्रतिवर्ष इसका लाभ उठा सकेंगे। यह सत्यार्थप्रकाश भवन वैदिक संस्कृति प्रचार केन्द्र के रूप में एक सशक्त संस्थान बनके उभरे यही प्रभु से प्रार्थना है।

अब बात संस्कारों की, भव्य झाँकियों के निर्माण की। देश के विभिन्न भागों में कार्य कर रहे अनेक शिल्पकारों से चर्चा करने के उपरान्त दिल्ली के एक प्रसिद्ध बंगाली मूल के चित्रकार, शिल्पकार और म्यूरल कार्य के विशेषज्ञ श्री गौर मोहन, अब संस्कारों के निर्माण और महर्षि दयानन्द की प्रतिमा के निर्माण का कार्य कर रहे हैं। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक कार्य प्रारम्भ हो चुका है। उन्होंने २ माह में कार्य पूर्ण करने का आश्वासन दिया है।

संस्कारों के निर्माण तथा आनुषंगिक खर्चों को मिलाकर लगभग ₹५०००००० का व्यय आएगा। इसके लिए न्यास ने जो नीति बनाई है वह यह है कि एक संस्कार के निर्माण के लिए जो दानदाता ₹३००००० का दान प्रदान करेंगे उनकी ओर से एक संस्कार प्रायोजित होगा। इसके अतिरिक्त न्यूनतम ₹५१००० देने वाले भी कुछ दान दाता होंगे तो ऐसे छह दानदाताओं को मिलाकर एक संस्कार प्रायोजित हो सकेगा। यद्यपि इस महनीय प्रोजेक्ट की शब्दों द्वारा जो रूपरेखा बताई जा सकती थी वह यथाशक्ति हमारे द्वारा प्रस्तुत किए जाने पर भी इसकी भव्यता की झलक मात्र ही आपको मिल सकी होगी, ऐसा हम जानते हैं पर फिर भी न्यास के पूर्व कार्यों और संकल्प शक्ति पर विश्वास करते हुए आप सभी इस पवित्र कार्य में रुचि लेंगे और अपनी उदारता से न्यास को सराबोर करेंगे ऐसा हमें विश्वास है।

इस अवसर पर स्मार्ट सिटी उदयपुर के माननीय अधिकारियों को भी प्रणाम करने के अपने कर्तव्य से वंचित नहीं रहना चाहूँगा जिन्होंने कि ५०००००० रुपए की राशि से इस जर्जर होते जा रहे भवन को पुनः पूर्ण दृढ़ता प्रदान की है। भवन की नींव से लेकर छत तक प्रत्येक स्थल को भली-भाँति सजाया संवारा है। डेढ़ सौ वर्ष पुरानी चित्रकारी जो हमें कभी नजर नहीं आई वह भी उन्होंने अपनी विशिष्ट पद्धति से उभार कर इस स्थल की प्राचीनता को स्थापित किया है। हमें सदैव यह भय सताता था कि कहीं भवन का कुछ भाग गिर ना जाए, परन्तु भवन की मरम्मत एवं रंग रोगन अत्यन्त व्यय साध्य था। परन्तु उक्त संस्थान ने इस कार्य को पूरा कर हमें इस चिन्ता से मुक्त किया है बारम्बार हमारी ओर से और न्यास की ओर से आभार।

बन्धुओं इस स्थल पर ऋषि ने ६.३० मास प्रवास किया था, सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ का प्रणयन सम्पूर्ण किया था। तो क्यों ना अत्याधुनिक नए-नए प्रकल्पों के माध्यम से उस महान् ग्रन्थ की शिक्षाओं को यहाँ से प्रचारित किया जाए, प्रसारित किया जाए, यह सोचकर इस न्यास ने न केवल योजनाओं का निर्माण किया वरन इसके न्यासी बन्धुओं ने अर्थ प्रदान कर उन योजनाओं को साकार भी किया। जो थोड़ी बहुत कमी शेष रह गई है, उसके लिए आपसे अत्यधिक अपेक्षाएँ हैं। क्या ही सुन्दर होगा कि आपकी उदार भावनाओं से निःसृत पवित्र धनराशि से आपका तथा जिन आत्मीयजन की स्मृति में आप यह दान प्रदान करेंगे उनका नाम सदैव के लिए यहाँ अंकित हो यहाँ दर्शनार्थ आने वाले लाखों व्यक्तियों के समक्ष यह घोषित करता रहे कि वैदिक विचारों के प्रसारण में आपका योगदान किसी से कम नहीं है।

अब यहीं पर मैं कृष्णावत बन्धुओं का हार्दिक आभार प्रकाशित करना चाहूँगा जिन्होंने कि न्यास की अतिथिशाला के नवीनीकरण का जिम्मा अपने ऊपर लिया है। आपके पूज्य पिताजी श्री घनश्याम सिंह जी कृष्णावत विधिवत आर्य समाजी तो नहीं थे परन्तु सुधार के कार्यक्रमों में, शिक्षा की उन्नत पद्धति में उनका सदैव विश्वास रहा और उन्होंने अपने जीवन को इसी प्रकार जिया। उनके सुपुत्र द्वय श्री कुंवर वीरम देव सिंह जी व यदुराज सिंह जी ने न्यास के निवेदन पर अतिथिशाला का निरीक्षण कर, अत्यन्त जर्जर हो चुके कमरों के पुनर्निर्माण/नवीनीकरण की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ली है। आज न्यास की ओर से, सम्पूर्ण न्यासी बन्धुओं की ओर से मैं उनका आभार प्रकाशित करना चाहूँगा। मैं आशा करता हूँ कि अतिशीघ्र यह कार्य भी पूर्ण हो जाएगा। **क्रमशः .....**

– अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

अकबर का शाब्दिक अर्थ महान् अवश्य होता है परन्तु शहंशाह कहे जाने वाला अकबर महान् कदापि नहीं था जैसा कि वामपन्थी इतिहासकारों ने स्थापित कर दिया है और विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। कैसी विचित्र बात है कि अब जनमानस इस पर पुनर्विचार भी नहीं करना चाहता जबकि ऐतिहासिक तथ्य चीख-चीख कर अकबर को वही घोषित कर रहे हैं जैसा कि शीर्षक दिया है, फिर भी सत्य स्वीकार्य क्यों नहीं? हम भारतीय इतिहासकारों की बात न मानें और केवल मुस्लिम और विदेशी इतिहासकारों की मानें तो भी अकबर किसी कोण से महान् साबित नहीं होता। नीचे ऐसे कुछ प्रमाण, जो अन्तरजाल पर उपस्थित एक लेख में उपलब्ध हैं पाठकों के लाभार्थ उद्धृत हैं-

क्रूर, विलासी व मतान्ध अकबर

क्रूरता की पराकाष्ठा

भारतीय इतिहास में भी अनेक युद्ध हुए हैं, उनका अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि युद्ध के भी कुछ नियम होते थे जिनका पालन दोनों पक्षों को करना होता था। जिसमें पराजित तथा शरणागत प्रतिपक्षी से उदारतापूर्वक व्यवहार करना तथा असैनिक प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाना विशेष महत्वपूर्ण था। महाराजा पृथ्वीराज चौहान ने गौरी को क्षमादान दिया ही था, परन्तु गौरी ने अपनी बारी आने पर चौहान के साथ क्या किया, यह सर्वविदित है। क्रूरता इन मुगल आक्रमणकारियों का चरित्र रहा है और अकबर इसका अपवाद नहीं था। हेमू को पराजित करने के बाद क्या हुआ? अकबर की क्रूरता को रेखांकित करते हुए अकबर के समय के इतिहास लेखक अहमद यादगार ने लिखा- 'बैरम खाँ ने निहत्थे और बुरी तरह घायल हिन्दू राजा हेमू के हाथ पैर बाँध दिये और उसे नौजवान शहजादे के पास ले गया और बोला, आप अपने पवित्र हाथों से इस काफिर का कत्ल कर दें और गाजी की उपाधि कुबूल करें और शहजादे ने उसका सिर उसके अपवित्र धड़ से अलग कर दिया।' (नवम्बर, ५ AD १५५६) (तारीख-ई-अफगान, अहमद यादगार, अनुवाद एलियट और डाउसन, खण्ड VI, पृष्ठ ६५-६६)

इस तरह अकबर ने १४ साल की आयु में ही गाजी (काफिरों का कातिल) होने का सम्मान पाया।

युद्ध में विपक्षी को मारना अधर्म नहीं यह तो ठीक है पर यहाँ बात क्रूरता की हो रही है। कोई भी आदर्श शासक घायल प्रतिद्वन्दी नरेश के साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता, जैसा अकबर ने हेमू के साथ किया। अकबर ने यहीं बस नहीं की। हेमू के परिवार के साथ उसने जो किया वह उसकी कलई खोलने में समर्थ है।

अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा है- 'हेमू के पिता को जीवित ले आया गया और नासिर-उल-मलिक के सामने पेश किया गया जिसने उसे इस्लाम कबूल करने का आदेश दिया, किन्तु उस वृद्ध पुरुष ने उत्तर दिया, 'मैंने अस्सी वर्ष तक अपने ईश्वर की पूजा की है। मैं अपने धर्म को कैसे त्याग सकता हूँ?' मौलाना परी मोहम्मद ने उसके उत्तर को अनसुना कर अपनी तलवार से उसका सर काट दिया।'

(अकबर नामा, अबुल फजल- एलियट और डाउसन, पृष्ठ २१)

इस विजय के तुरन्त बाद अकबर ने काफिरों के कटे हुए सिरों से एक ऊँची मीनार बनवायी।

इन क्रूर मुगलों को कटे हुए सिरों की मीनार बनवाने का शौक था। सितम्बर १५७३ को भी अकबर ने अहमदाबाद में २००० दुश्मनों के सिर काटकर अब तक की सबसे ऊँची सिरों की मीनार बनवायी और अपने दादा बाबर का रिकार्ड तोड़ दिया।

अकबरनामा के अनुसार २ मार्च १५७५ को अकबर ने बंगाल विजय के दौरान इतने सैनिकों और नागरिकों की हत्या करवायी कि उससे कटे सिरों की आठ मीनारें बनायी गयीं। यह फिर से एक नया रिकार्ड था।

दो सेनायें जब युद्धरत होती हैं तो सर धड़ से जुदा होते ही हैं परन्तु केवल सैनिकों के। परन्तु निर्दोष नागरिकों को मारना क्रूर मुगल शासकों का ही शौक हो सकता था। अकबर की चित्तौड़ विजय के विषय में अबुल फजल ने लिखा था- 'अकबर के आदेशानुसार प्रथम ८००० राजपूत योद्धाओं को बन्दी बना लिया गया, और बाद में उनका वध कर दिया गया। उनके साथ-साथ विजय के बाद प्रातःकाल से दोपहर तक अन्य ४०००० किसानों का भी वध कर दिया गया जिनमें ३००० बच्चे और बूढ़े थे।' (अकबरनामा, अबुल फजल, अनुवाद एच. बैबरिज)

अकबर के जीवन पर शोध करने वाले इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ ने साफ लिखा है कि अकबर एक दुष्कर्मी, घृणित एवं नृशंस हत्याकाण्ड करने वाला क्रूर शासक था।

विन्सेंट स्मिथ ने किताब ही यहाँ से शुरू की है कि 'अकबर भारत में एक विदेशी था। उसकी नसों में एक बूँद खून भी भारतीय नहीं था। अकबर मुगल से ज्यादा एक तुर्क था।'

चित्तौड़ की विजय के बाद अकबर ने कुछ फतहनामे प्रसारित करवाये थे। जिससे हिन्दुओं के प्रति उसकी गहन आन्तरिक घृणा प्रकाशित हो गई थी। उनमें से एक फतहनामा पढ़िये-

'अल्लाह की खयाति बढ़े इसके लिए हमारे कर्तव्य परायण मुजाहिद्दीनों ने अपवित्र काफिरों का अपनी बिजली की तरह चमकीली कड़कड़ाती तलवारों द्वारा वध कर दिया। हमने अपना बहुमूल्य समय और अपनी शक्ति घिजा (जिहाद) में ही लगा दिया है और अल्लाह के सहयोग से काफिरों के अधीन बस्तियों, किलों, शहरों को विजय कर अपने अधीन कर लिया है, कृपालु अल्लाह उन्हें त्याग दे और उन सभी का विनाश कर दें। हमने पूजा स्थलों, उसकी मूर्तियों का और काफिरों के अन्य स्थानों का विध्वंस कर दिया है।'

(फतहनामा-ई-चित्तौड़ मार्च १५८६ नई दिल्ली)

विन्सेंट स्मिथ के अनुसार अकबर ने मुजफ्फर शाह को हाथी से कुचलवाया। हमजबान की जबान ही कटवा डाली। मसूद हुसैन मिर्जा की आँखें सीकर बन्द कर दी गयीं। उसके ३०० साथी उसके सामने लाये गए और उनके चेहरों पर अजीबोगरीब तरीकों से गधों, भेड़ों और कुत्तों की खालें डाल कर काट डाला गयी।

विलासी अकबर

अपने हरम को सम्पन्न करने के लिए अकबर ने अनेकों हिन्दू राजकुमारियों के साथ जबरन शादियाँ की थी। बहुत से लोग इन घटनाओं को अकबर के धर्म समन्वय का प्रमाण मानते हैं। हम यहाँ ऐसे बुद्धिजीवियों से पूछना चाहते हैं कि क्या उसने कभी भी, किसी मुगल महिला को हिन्दू से शादी करने दी। अपनी किसी परिवारी महिला का विवाह हिन्दू राजा से किया? नहीं। इतिहासकारों के अनुसार केवल अकबर के शासनकाल में ३८ राजपूत राजकुमारियाँ शाही खानदान में ब्याही जा चुकी थीं। १२ अकबर को, १७ शहजादा सलीम को, छः दानियाल को, २ मुराद को और १ सलीम के पुत्र खुसरो को।

कहा यह भी जाता है कि अकबर ने अपनी अय्याशी के लिए इस्लाम का भी दुरुपयोग किया था। चूँकि सुन्नी फिरके के अनुसार एक मुस्लिम एक साथ चार से अधिक औरतें नहीं रख सकता और जब अकबर उस से अधिक औरतें रखने लगा तो काजी ने उसे रोकने की कोशिश की। इस से नाराज होकर अकबर ने उस सुन्नी काजी को हटा कर शिया काजी को रख लिया क्योंकि शिया फिरके में असीमित और अस्थायी शादियों की इजाजत है, ऐसी शादियों को अरबी में 'मुतअ' कहा जाता है।

अकबर के स्वयं के इतिहासकार की बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता। अबुल फजल ने अकबर के हरम को इस तरह वर्णित किया है-

'अकबर के हरम में पाँच हजार औरतें थीं और ये पाँच हजार औरतें उसकी ३६ पत्नियों से अलग थीं। शहंशाह के

महल के पास ही एक शराबखाना बनाया गया था। वहाँ इतनी वेश्याएँ इकट्ठी हो गयीं कि उनकी गिनती करनी भी मुश्किल हो गयी। अगर कोई दरबारी किसी नयी लड़की को घर ले जाना चाहे तो उसको अकबर से आज्ञा लेनी पड़ती थी। कई बार सुन्दर लड़कियों को ले जाने के लिए लोगों में झगड़ा भी हो जाता था। एक बार अकबर ने खुद कुछ वेश्याओं को बुलाया और उनसे पूछा कि उनसे सबसे पहले भोग किसने किया।'

अकबर औरतों के लिबास में मीना बाजार जाता था जो हर नये साल की पहली शाम को लगता था। अकबर अपने दरबारियों को अपनी स्त्रियों को वहाँ सज-धज कर भेजने का आदेश देता था। मीना बाजार में जो औरत अकबर को पसंद आ जाती, उसके महान् फौजी उस औरत को उठा ले जाते और कामी अकबर की अय्याशी के लिए हरम में पटक देते। अकबर महान् उन्हें एक रात से लेकर एक महीने तक अपनी हरम में खिदमत का मौका देते थे। जब शाही दस्ते शहर से बाहर जाते थे तो अकबर के हरम की औरतें जानवरों की तरह महल में बन्द कर दी जाती थीं।

अकबर के दुश्चरित्र का क्या वर्णन किया जाय। उसने बैरम खान को भी नही बक्शा। बैरम खान जो अकबर के पिता जैसा और संरक्षक था, उसकी हत्या करके इसने उसकी पत्नी अर्थात् अपनी माता के समान स्त्री से शादी की ।

इतिहासकार आर. सी मजूमदार लिखते हैं कि अकबर की गंदी नजर गौंडवाना की विधवा रानी दुर्गावती पर थी।

'सन् १५६४ में अकबर ने अपनी हवस की शान्ति के लिए रानी दुर्गावती पर आक्रमण कर दिया किन्तु एक वीरतापूर्ण

संघर्ष के बाद अपनी हार निश्चित देखकर रानी ने अपनी ही छाती में छुरा घोंपकर आत्महत्या कर ली। किन्तु उसकी बहिन और पुत्रवधू को बन्दी बना लिया गया। और अकबर ने उसे अपने हरम में ले लिया। उस समय अकबर की उम्र २२ वर्ष और रानी दुर्गावती की ४० वर्ष थी।'

(आर. सी. मजूमदार, दी मुगल ऐम्पायर, खण्ड VII)

हिन्दू राजाओं कि विधवाओं को भी इस महापातकी ने नहीं छोड़ा। अकबर को महिमा मण्डित करने के क्रम में सबसे मनगढ़ंत किस्सा यह है कि अकबर ने दया करके सतीप्रथा पर रोक लगाई। जबकि इसके पीछे उसका मुख्य मकसद केवल यही था कि राजवंशीय हिन्दू नारियों के पतियों को मरवाकर एवं उनको सती होने से रोककर अपने हरम में डालकर एय्याशी करना।

राजकुमार जयमाल की हत्या के पश्चात् अपनी अस्मत बचाने को घोड़े पर सवार होकर सती होने जा रही उसकी पत्नी को अकबर ने रास्ते में ही पकड़ लिया। शमशान घाट जा रहे उसके सारे सम्बन्धियों को वहीं से कारागार में सड़ने के लिए भेज दिया और राजकुमारी को अपने हरम में ठूंस दिया।

इसी तरह पन्ना के राजकुमार को मारकर उसकी विधवा पत्नी का अपहरण कर अकबर ने अपने हरम में ले लिया।

अकबर और इस्लाम

हिन्दुस्तानी मुसलमानों को यह कहकर बेवकूफ बनाया जाता है कि अकबर ने इस्लाम की अच्छाइयों को पेश किया। असलियत यह है कि कुरआन के खिलाफ जाकर ३६ शादियाँ करना, शराब पीना, नशा करना, दूसरों से अपने आगे सजदा करवाना आदि इस्लाम के लिए हराम हैं और इसीलिए इसके नाम की मस्जिद भी हराम है।

अकबर स्वयं पैगम्बर बनना चाहता था इसलिए उसने अपना नया धर्म 'दीन-ए-इलाही' चलाया। जिसका एकमात्र उद्देश्य खुद की बड़ाई करवाना था। यहाँ तक कि मुसलमानों के कलमे में यह शब्द 'अकबर खलीफतुल्लाह' भी जुड़वा दिया था।

उसने लोगों को आदेश दिए कि आपस में अस्सलाम वालैकुम नहीं बल्कि 'अल्लाह ओ अकबर' कहकर एक दूसरे का अभिवादन किया जाए। यही नहीं अकबर ने हिन्दुओं को गुमराह करने के लिए एक फर्जी उपनिषद् 'अल्लोपनिषद्' बनवाया था जिसमें अरबी और संस्कृत मिश्रित भाषा में मुहम्मद को अल्लाह का रसूल और अकबर को खलीफा बताया गया था। इस फर्जी उपनिषद् का उल्लेख महर्षि

दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में किया है।

उसके चाटुकारों ने इस धूर्तता को भी उसकी उदारता की तरह पेश किया। जबकि वास्तविकता ये है कि उस धर्म को मानने वाले अकबरनामा में लिखित कुल १८ लोगों में से केवल एक बीरबल हिन्दू था।

अकबर ने अपने को रूहानी ताकतों से भरपूर साबित करने

के लिए कितने ही झूठ बोले। जैसे कि उसके पैरों की धुलाई करने से निकले गंदे पानी में अद्भुत ताकत है जो रोगों का इलाज कर सकता है। अकबर के पैरों का पानी लेने के लिए लोगों की भीड़ लगवाई जाती थी। उसके दरबारियों को तो इसलिए अकबर के नापाक पैर का चरणामृत पीना पड़ता था ताकि वह नाराज न हो जाए। अकबर ने एक आदमी को केवल इसी काम पर रखा था कि वह उनको जहर दे सके जो लोग उसे पसन्द नहीं।

मतान्ध अकबर

अन्य धर्मों का अकबर सामान रूप से सम्मान करता था, यह बात बहुप्रचारित किन्तु तथ्यों की रोशनी में असत्य है। इस बात में दिखावा ज्यादा सत्य कम है।

अकबरनामा के एक उल्लेख से स्पष्ट हो जाता है कि उसके हिन्दू दरबारियों का प्रायः अपमान हुआ करता था। ग्वालियर में जन्मे संगीत सम्राट रामतनु पाण्डेय उर्फ तानसेन की तारीफ करते-करते मुस्लिम दरबारी उसके मुँह में चबाया हुआ पान ठूँस देते थे। भगवन्त दास और दसवन्त ने सम्भवतः इसी लिए आत्महत्या कर ली थी।

प्रसिद्ध नवरत्न टोडरमल अकबर की लूट का हिसाब करता था। इसका काम था जजिया न देने वालों की औरतों को हरम का रास्ता दिखाना। वफादार होने के बावजूद अकबर ने एक दिन क्रुद्ध होकर उसकी पूजा की मूर्तियाँ तुड़वा दीं।

जिन्दगी भर अकबर की गुलामी करने के बाद टोडरमल ने अपने जीवन के आखिरी समय में अपनी गलती मान कर दरबार से इस्तीफा दे दिया और अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए प्राण त्यागने की इच्छा से वाराणसी होते हुए हरिद्वार चला गया और वहीं मरा।

अकबर महान् के खुद के पुत्र जहाँगीर ने लिखा है कि अकबर कुछ भी लिखना पढ़ना नहीं जानता था पर यह दिखाता था कि वह बड़ा भारी विद्वान् है।

मुगल आक्रमणकारी थे यह सिद्ध हो चुका है। मुगल दरबार तुर्क एवं ईरानी शक्ल ले चुका था। कभी भारतीय न बन सका। पर ऐतिहासिक तथ्य व सत्य यह भी है कि भारतीय राजाओं ने लगातार संघर्ष कर मुगल साम्राज्य को कभी स्थिर नहीं होने दिया।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर

कर्म की स्वतंत्रता-एक वरदान

सज्जनों! दयालु परमेश्वर ने मनुष्य को कर्म की स्वतंत्रता का अधिकार देकर अद्वितीय उपकार किया है। ईश्वर सर्वरक्षक है। उसकी दयालुता देखिये। मनुष्य के पाप की ओर प्रवृत्त होते ही ईश्वर उसके मन में भय, शंका, लज्जा, संकोच के भाव उत्पन्न करके मनुष्य को ऐसा कार्य न करने के लिए स्वतन्त्र कर देता है। इसी प्रकार जब मनुष्य कोई श्रेष्ठ धर्मयुक्त कर्म करने का निर्णय करता है तो ईश्वर उसके हृदय में प्रसन्नता उत्साह, गर्व, नम्रता का भाव भरकर ऐसा कर्म करने हेतु प्रेरित करता है। यह मनुष्य की स्वतंत्रता का अधिकार ही है कि वह पाप की ओर झुके और पुण्य की ओर इसीलिए केवल ईश्वर ही मनुष्य को पाप कर्म के लिए दण्ड देता है अन्य कोई देवी देवता या ग्रह नहीं। हाँ! ईश्वर किसी भी परिस्थिति में क्षमा नहीं करता है। कर्म स्वतंत्रता का वरदान मनुष्य के सामने तीन रास्ते खोलता है-

१. मनुष्य द्वारा श्रेष्ठ पुण्य कर्म करके देव योनि प्राप्त करना अथवा योगाभ्यास व साधना द्वारा मुक्ति पाना।
२. पाप कर्मों की अपेक्षा उत्तम कर्म, परोपकारी कर्म अधिक करना और पुनः मनुष्य योनि प्राप्त करना।
३. नीच पापरूपी कर्म करना अथवा पुण्य कर्मों की अपेक्षा अधिक पाप कर्म करना और मृत्यु के उपरान्त नीच योनियों में जाना।

मित्रों! आपके सामने तिराहा है जिधर जाना है जाओ क्योंकि ईश्वर ने कर्म करने की पूर्ण स्वतंत्रता आपको दे रखी है। उसने आपको कठपुतली बनाकर सृष्टि में नहीं भेजा है। कोई आपको रोकेगा नहीं। ईश्वर भी नहीं।

अपामतिं दुर्मतिं बाधमानाऽऊवध्यं वातꣳसब्वं तदारात्।

- यजुर्वेद १६/८४

हम अज्ञान दरिद्रता कुमति को दूर कर आगे बढ़ें।

जन्म सिद्धान्त एवं चौरासी लाख योनियों का सत्य।

सज्जनों! दुःख, सुख, क्लेश, अगला जन्म मनुष्यों के स्वयं के कर्मों के फलस्वरूप ही निर्मित होते हैं।

अथैकयोर्ध्व उदानः पुण्येन पुण्यं लोकं नयति।
पापेन पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम्॥ (प्रश्नोपनिषद्)

भावार्थ- पुण्य कर्म जीवात्मा को उत्तम योनियों और पाप कर्म जीवात्मा को नीचे योनियों में ले जाता है। पाप-पुण्य बराबर हैं तो जीवात्मा मनुष्य योनि को प्राप्त करता है।

अतः मनुष्य उत्तम कर्म करके मनुष्य योनि से मुक्ति मनुष्य योनि से देव योनि मनुष्य से मनुष्य योनि पा सकता है और नीच पापरूपी कर्म करके साधारण अथवा दरिद्र मनुष्य पशु-पक्षी योनि, कीट-पतंग योनि, स्थावर योनि अथवा भिन्न योनियों में जा सकता है। पाप-पुण्य ५०-५० प्रतिशत होने पर मनुष्य को सामान्यतः पुनः साधारण मनुष्य योनि मिलती है ताकि वह उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सके।

क्या प्रत्येक आत्मा ८४ लाख योनियाँ भोगने के बाद ही मनुष्य योनि में जन्म लेती है? नहीं पूर्णतया असत्य है। यह धारणा/मत वेदसम्मत नहीं है। यदि ऐसा हो तो फिर पुण्य-पाप कर्म में मनुष्य अन्तर ही नहीं करेगा। केवल ८४ लाख योनियों के बाद अपने नम्बर की प्रतीक्षा करेगा। यदि यह धारणा सत्य होती तो सभी सत्य शास्त्र एवं पथ, सम्प्रदाय पुण्य कर्म करने और पाप कर्म न करने की प्रेरणा नहीं देते। ८४ लाख योनियों का वर्णन वेदों में नहीं मिलता।

- विश्वम्भरनाथ अरोड़ा, दिल्ली
साभार- कर्म ही बलवान

भायाम् रतः इति भारतः

कुछ समय पूर्व बिहार विधान सभा के चुनाव हुए थे। इसमें ५ सदस्य एक मुस्लिम संगठन के भी विधायक के रूप में निर्वाचित हुए। तत्पश्चात् इन विधायकों ने शपथ ग्रहण करते समय 'भारत' के प्रति निष्ठावान रहने की शपथ ली है। इसके तुरन्त बाद पार्टी के सदस्यों ने इस शपथ पर आपत्ति करते हुए कहा है कि 'भारत' की बजाय 'हिन्दुस्तान' के संविधान के प्रति निष्ठावान रहने की शपथ लेनी चाहिए थी। उक्त मुस्लिम संगठन की नीतियों तथा कार्यों के समर्थक हम नहीं हैं, क्योंकि वे राष्ट्रहित में नहीं है परन्तु 'भारत' व 'हिन्दुस्तान' के विवाद में उनका समर्थन करना उचित प्रतीत होता है। आइए, इस विषय पर निष्पक्ष व तथ्यात्मक तौर पर विचार करते हैं।

भारतीय संविधान में अपने देश के दो नाम उल्लिखित है- India That is Bharat 'हिन्दुस्तान' नाम इस देश का कहीं भी संविधान में नहीं लिखा गया है। अतः संसद वा विधान सभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित होने पर यदि कोई व्यक्ति 'हिन्दुस्तान' के संविधान के प्रति वफ़ादार रहने की शपथ लेना चाहेगा तो वह शपथ असंवैधानिक ही होगी। वह शपथ दिलाने वाला व्यक्ति भी ऐसी शपथ दिलाने को तैयार न होगा। यदि हमारे इस विचार पर इस राजनैतिक पार्टी अथवा किसी अन्य पार्टी वालों को असहमति है तो वे स्वयं 'हिन्दुस्तान' के प्रति वफादार रहने की शपथ लेकर दिखाएँ। स्वयं→ भारत→के संविधान के प्रति वफ़ादार रहने की शपथ→ लेकर संसद तथा विधान सभाओं में क्यों जा बैठते हैं? अब तो उनके दल की सरकार है। यदि वे 'भारत' की बजाय 'हिन्दुस्तान' से सच्चा प्रेम करते हैं तथा इसे ही उचित व सही मानते हैं तो संविधान में संशोधन करके इस देश का नाम 'हिन्दुस्तान' क्यों नहीं रख लेते? वस्तुतः हमारा मूल नाम आर्य है तथा हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त था परन्तु→उन्हें 'हिन्दू' शब्द के प्रति दुराग्रह है तथा हिन्दुस्तान शब्द और भारतीय संस्कृति की रट लगाने की बजाय आर्य, वेद तथा वैदिक संस्कृति पुकारना चाहिए। उन्हें आर्यावर्त्त व भारत शब्दों के सही अर्थ जानने के उद्देश्य से हम यहाँ शब्दकोशों के आधार पर कुछ निवेदन कर रहे हैं। इन्हें जानने के पश्चात् हठ का परित्याग करने को उद्यत हो जाएँ। ऐसे बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे श्री वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत हिन्दी कोश के पृष्ठ १५६ पर प्रकाशित 'आर्य' के अर्थों को पढ़ने का कष्ट करें जिसके अनुसार इस शब्द के अनेक अर्थ हैं। कुछ अर्थ हम दे रहें हैं- आदरणीय, सम्मानीय, कुलीन, उच्च पदस्थ, मनोहर, श्रेष्ठ, अत्युत्कृष्ट। जो अनार्य, दस्यु तथा दास से भिन्न हैं, सत्कुलोत्पन्न पुरुष, सच्चरित्र पुरुष, गुरु, अध्यापक, स्वामी, मित्र, आदरणीया महिला, श्रेष्ठ पुरुषों का मित्र, सम्माननीय श्रीमती जी, सम्मानीय व्यक्तियों के पास जिनकी पहुँच अनायास होती है, भद्र, गौरवशाली पुरुष, सभ्य तथा कुछ अन्य। 'अमर कोशः' संस्कृत हिन्दी कोश में आवर्त (=आवर्तः) का अर्थ है= घनी बस्ती, जहाँ बहुत लोग इकट्ठे रहते हों) महर्षि दयानन्द व उनसे भी पहले के, ऋषियों द्वारा स्वीकृत अर्थ है= बसाया गया। दोनों शब्दों का अर्थ हुआ=आर्यों द्वारा बसाया गया। इस अर्थ की उच्चता, श्रेष्ठता व कुलीनता कोई उच्च, श्रेष्ठ तथा कुलीन व्यक्ति ही समझ सकता है, स्वीकार कर सकता है, मान सकता है। इसके विपरीत 'हिन्दू' व 'हिन्दुस्तान' के समर्थक, प्रचारक, हठी व दुराग्रही लोग→ 'हिन्दु शब्द को किसी भारतीय वैदिक ग्रन्थ में से→हमें दिखाएँ, यह हमारी प्रार्थना है। हिन्दू व हिन्दुस्तान शब्द हमें विदेशी अक्रान्ताओं ने अपमानित करने के लिए दिये थे, जिसे हम माँ का दूध समझकर पचा रहे हैं। वे जब भारत में आ गए तो हमने उन्हें 'म्लेच्छ' शब्द से सम्बोधित किया। इसका अर्थ हेय, हीन,

पापी, नीच तथा जिनमें वर्णाश्रमधर्म न हो, तो उन्होंने हमें 'हिन्दू' कहकर पुकारा। 'हिन्दू' सम्बोधन के समर्थक कहते हैं- 'यह फारसी शब्द है तथा फारसी भाषा में संस्कृत-हिन्दी का 'स' अक्षर नहीं है अतः 'स' अक्षर फारसी में 'ह' हो जाता है। इस कारण वे लोग सिन्धु नदी के पार रहने वालों को हिन्दू कहते थे।' यदि हम इस कथन की सत्यता की परख करते हैं तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि सिन्धु शब्द में 'स' विद्यमान है तो सिन्धु नदी का नाम भी बदलकर 'हिन्धु' क्यों उन्होंने नहीं रखा? उनकी भाषा फारसी में स→ न था तो इसका नाम 'फारही' क्यों नहीं हुआ? हिन्दी में कई विदेशज शब्द आ गए हैं। इनमें एक शब्द है- हिसार। हरियाणा में इस नाम के एक नगर का नामकरण मुस्लिमों के शासन काल में ही हुआ था। उनकी भाषा फारसी के इस शब्द में 'स' कहाँ से आ गया? अन्य भी कुछ शब्द हैं, जो फारसी के हैं परन्तु उनमें 'स' का प्रयोग हुआ है। ईरान का एक नगर है- 'इस्फाना' इस में 'स' कहाँ से आया? पारसियों की पुस्तक है- जिन्दावस्ता। इसमें भी 'स' क्यों है? मुसलमान शब्द फारसी का है। इसे मुहलमान बनने में और कितने वर्ष लगेंगे? गुजरात राज्य में गोण्डल नामक एक राज्य था। वहाँ का एक सर्वाधिक शिक्षित व प्रगतिशील शासक हुआ है- सर भागवत सिंह। उसने गुजराती शब्दकोश तैयार कराया था। जिसे भागवत गोमण्डल नाम से जाना जाता है। यह नौ खण्डों में है तथा इसके ६२६६ पृष्ठ हैं। इसके पृष्ठ ६२१६ पर हिन्दू शब्द के अर्थ दिये हैं- चोर, काला, काफिर, हरामजादा इत्यादि। फारसी के शब्दकोश में भी यही अर्थ मिलते हैं। यही अर्थ महर्षि दयानन्द महाराज ने लिए हैं तथा १० जुलाई, १८७५ को पुणे में भाषण देते समय उनके मुख से हिन्दू शब्द निकल गया था तो उन्होंने तुरन्त सुधार करके आर्य शब्द का प्रयोग किया था। हम कब ऐसा करेंगे?

अब तनिक भारत शब्द पर विचार करते हैं। कुछ लोग इसे दुष्यन्त पुत्र भरत के कारण प्रयोग हुआ शब्द कहते हैं। जैन मत वाले अपने सम्प्रदाय के किसी राजा भरत की महानता के कारण रखा गया इस देश का नाम घोषित करते हैं। परन्तु इन दोनों या किसी अन्य पुरुष के नाम पर देश का नाम भारत रखने का प्रमाण नहीं है। वस्तुतः इस 'भारत' की महिमा निराली है, महान् है।

भा (भा+अङ्+टाप्) प्रकाश, आभा, कान्ति, किरणों का समूह, सूर्य मण्डल, तेजोमण्डल, जगमगाना, चमकना, प्रभातकाल होना, उन्नति करना, विचारों में आगे बढ़ना। ये अर्थ आप वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत-हिन्दी कोश के पृष्ठ ७३४ पर देख सकते हैं। भास्कर शब्द इसी आधार पर बना है जिसका अर्थ सूर्य है। सूर्य का प्रकाश→व ज्ञान का आलोक एक ही अर्थ में प्रयोग होता है। इस 'भा' शब्द के साथ 'रत' मिलाने से भारत शब्द बना है। 'रत' का अर्थ है= तल्लीन, व्यस्त, तृप्त, मुग्ध, प्रसन्न, संलग्न, अनुरक्त, तुला हुआ। इस आधार पर 'भा' व 'रत' को मिलाकर बना शब्द भारत है। भायाम् रतः इति भारतः। जो ज्ञान में रत है, उसे भारत कहते हैं। तभी दूर-दूर के देशों के लोग भारत में आकर यहाँ के विद्वानों से ज्ञान प्राप्त करके अपना व भारत का नाम उज्जवल करते रहे हैं-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। - मनु. २/२०

संविधान में हमारे देश का गौरवमय नाम भारत (=भा+रत) दर्ज है तो हमें हीन व हेय अर्थ वाले नाम हिन्दुस्तान (=हिन्दू+स्थान) पुकारने पर हठ तुरन्त त्यागना चाहिए।

- इन्द्र जित् देव
चूना भट्टियाँ, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा)
चलभाष- ९७२९२८०८७५

विश्व भर से आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

मैं अवनीश मैत्रि अपनी धर्मपत्नी ज्योति के साथ नवलखा महल के भ्रमनार्थ आया। मुझे इतनी प्रसन्नता हुई यहाँ की चित्रवीर्था एवं यज्ञशाला देखकर लगा कि वैदिक संस्कृति और आर्य समाज का प्रचार उदयपुर के पर्यटन को सफल सार्थक कर रहा है। आदरणीय श्रीमान् अशोक जी से मिलकर यहाँ के आगामी एवं कार्यरत योजनाओं का परिचय प्राप्त कर प्रसन्नता और अधिक बढ़ गयी। भविष्य की योजनायें आगामी युवा वर्ग एवं विद्यार्थियों को केन्द्रित रखकर की जा रही है जो पवित्र पावन कार्य आने वाली पीढ़ियों को भी सत्यज्ञान, वेदज्ञान का प्रकाश नवलखा महल जैसे केन्द्रों से प्रचारित प्रकाशित होता रहेगा। अनेकशः शुभकामनायें। हार्दिक आभार संस्थान का।

भवदीय- अवनीश मैत्रि

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु श्री राकेश जी जैन, उदयपुर (राज.) ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग की पढ़ाई

सराहनीय है पहल - पर कैसे होगी सफल?

जर्मनी, रूस, फ्रांस, जापान और चीन सहित दुनिया के दर्जनों देशों में पूरी शिक्षा ही स्थानीय भाषाओं में दी जाती है। हाल ही में देश में आई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी स्थानीय भारतीय भाषाओं में पढ़ाई पर जोर दिया है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआइसीटीई) ने फिलहाल नए शैक्षणिक सत्र से हिन्दी सहित आठ भारतीय भाषाओं में इसे पढ़ाने की मंजूरी दे दी है। आने वाले दिनों में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआइसीटीई) की योजना करीब ११ भारतीय भाषाओं में इसे पढ़ाने की है। इस बीच हिन्दी के साथ इसे जिन अन्य सात भारतीय भाषाओं में पढ़ाने की मंजूरी दी गई है, उनमें मराठी, बंगाली, तेलगु, तमिल, गुजराती, कन्नड़ और मलयालम शामिल हैं। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने हिन्दी सहित आठ स्थानीय भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों को शुरू करने की अनुमति के साथ ही इन सभी भाषाओं में पाठ्यक्रम को भी तैयार करने का काम शुरू कर दिया है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष प्रोफेसर अनिल सहस्रबुद्धे के अनुसार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों को आगे बढ़ाते हुए यह पहल की गई है। अभी तो सिर्फ हिन्दी सहित आठ स्थानीय भारतीय भाषाओं में पढ़ाने की अनुमति दी गई है। आगे चलकर और ११ स्थानीय भाषाओं में भी इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम की पढ़ाई करने की सुविधा मिलेगी। फिलहाल इसके लिए साफ्टवेयर की मदद ली जा रही है, जो २२ भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने में सक्षम है। इसकी मदद से वह अंग्रेजी में मौजूद पाठ्यक्रम का तेजी से अनुवाद कर सकता है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआइसीटीई) ने हाल ही में अपनी तरह का यह नया साफ्टवेयर तैयार किया है।

भारत सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत जहाँ मातृभाषा में शिक्षा के प्रावधान किए गए हैं, वहीं दूसरी ओर इंजीनियरिंग जैसी तकनीकी शिक्षा को जनभाषा में अर्थात् भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाना एक अत्यधिक सराहनीय व साहसिक कदम है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कहना था कि यदि देश में विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में दी जाती तो इस देश में इतने आविष्कारक और उच्च स्तरीय वैज्ञानिक होते कि आविष्कारकों के नाम पर हम जो दो-तीन नाम गिनवाते हैं, उन्हें तो कभी याद ही नहीं करते। देखा जाए तो सरकार की यह नीति महात्मा गाँधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है। उल्लेखनीय है कि विश्व के बीस सर्वाधिक विकसित देश वे हैं जहाँ शिक्षा और कामकाज उनकी अपनी भाषाओं में होता है। जबकि बीस सबसे पिछड़े देश विदेशी भाषा के मोहताज हैं। लेकिन सच तो यह है कि स्वयं को गाँधीवादी मानने वाली सरकारों ने महात्मा गाँधी के चिन्तन की चिन्दी-चिन्दी उड़ाते हुए बड़ी ही चालाकी से देश की व्यवस्था और शिक्षा की व्यवस्था का अंग्रेजीकरण किया। १९८६ की शिक्षा नीति ने तो छोटे-छोटे गाँव तक और नर्सरी स्तर तक भी अंग्रेजी माध्यम पहुँचा दिया। इसके कारण अधिकांश विद्यार्थी विशेषकर ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थी अपनी बुद्धिमत्ता के बावजूद बिछड़ने लगे। सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी स्थानीय भारतीय भाषाओं में पढ़ाई पर जोर दिया है। सरकार का मानना है कि स्थानीय भाषाओं में पढ़ाई से बच्चे सभी विषयों को बेहद आसानी से बेहतर तरीके से सीख सकते हैं। जबकि अंग्रेजी या फिर किसी दूसरी भाषा में पढ़ाई से उन्हें दिक्कत होती है। इस पहल से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों से निकलने वाले बच्चों को सबसे ज्यादा फायदा होगा, क्योंकि मौजूदा समय में वह इन पाठ्यक्रमों के अंग्रेजी भाषा में होने के चलते पढ़ाई से पीछे हट जाते हैं। अपनी भाषाओं में शिक्षा मिलने के चलते विद्यार्थी

रटने के बजाए समझेंगे और बेहतर कार्य कर सकेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का यह कहना बिल्कुल सही है कि भारतीय भाषाओं में शिक्षा मिलने से ग्रामीण, आदिवासी, क्षेत्र के विद्यार्थियों और वंचित निर्धन वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष लाभ मिलेगा।

अंग्रेजी माध्यम के कारण मौलिक चिन्तन के बजाय सभी क्षेत्रों में हमारे विद्यार्थी नकलची और रट्टू तोते बन रहे हैं। शिक्षा का स्तर ज्ञान से नहीं बल्कि अंग्रेजी के ज्ञान से मापा जाने लगा है। अंग्रेजी का साम्राज्य देश में इस हद तक फैल चुका है कि अब वे राजनीतिक दल और समाजवादी नेता जो कभी हिन्दी और भारतीय भाषाओं की पैरवी करते थे, भारतीय भाषाओं के प्रबल समर्थक और प्रखर समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया के लालू यादव और मुलायम सिंह यादव जैसे कथित अनुयायी जो कभी हिन्दी और भारतीय भाषाओं की आवाज बुलन्द करते थे, अब वे और उनके वारिस भी इस विषय पर खामोश हैं। कई तो विदेशों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ कर आए हैं। वामपन्थी भी कभी भारतीय भाषाओं के साथ नहीं रहे। तमाम राजनीतिक दल इस मुद्दे पर चुप्पी साध कर बैठे हैं। हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं की बात करते ही राजनीतिक विरोध के स्वर मुखर होने लगते हैं। अब जबकि कई पीढ़ियाँ अंग्रेजी में पल-पढ़कर बड़ी हुई हैं तो ऐसे में भारतीय भाषाओं की बात करना राजनीतिक तौर पर भी कम जोखिम भरा नहीं है। इन परिस्थितियों में, अंग्रेजी के ऐसे वातावरण में शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दिए जाने की पहल ज्ञान-विज्ञान और राष्ट्रीयता दोनों ही दृष्टि से अत्यन्त सराहनीय व साहसिक निर्णय है। राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता के चलते नेताओं से तो यह अपेक्षा नहीं की जा सकती लेकिन सभी भारतीय भाषा प्रेमियों और मौलिकता के समर्थकों को इसका स्वागत करना ही चाहिए।

लेकिन अब यक्ष प्रश्न यह है कि क्या भारतीय भाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था और मान्यता के माध्यम से देश में लोग अपनी भाषाओं में पढ़ने लगेंगे? यहाँ यह नहीं भूलना चाहिए कि करीब ७५ साल में भारत का अंग्रेजीकरण किया जा चुका है। भारतीय भाषाओं के नाम पर जो कुछ भी हुआ है वह किसी नौटंकी से अधिक नहीं है। अब उच्च शिक्षा ही नहीं शिक्षा शब्द भी अंग्रेजी का पर्याय बन चुका है। ऐसे में यह पहल क्या एक शिगूफा बन कर तो नहीं रह जाएगी? क्या अंग्रेजी के नक्कारखाने में यह पहल तूती की आवाज भी बन सकेगी? क्या इस पहल को अभिभावकों और विद्यार्थियों को प्रतिसाद मिल सकेगा? हमें यहाँ अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल का उदाहरण भी ले लेना चाहिए जहाँ हिन्दी माध्यम से प्रारम्भ किए गए और फीस भी बहुत ही कम रखी गई। जहाँ एक ओर लोग लाखों रुपए डोनेशन देकर और मोटी फीस देकर अंग्रेजी माध्यम के इंजीनियरिंग आदि कॉलेजों में दाखिला लेते वहीं हिन्दी माध्यम से शिक्षा के इन प्रयासों को कोई विशेष प्रतिसाद नहीं मिल पाता। इसमें एक बड़ा कारण यह है कि पढ़ाई तो हो जाएगी लेकिन आगे नौकरी कैसे मिलेगी? वहाँ तो अंग्रेजी का वर्चस्व है। नौकरी के लिए परीक्षा, साक्षात्कार आदि सब कुछ तो अंग्रेजी में ही होता है फिर उसमें यदि पता लगे कि विद्यार्थी ने पढ़ाई मातृभाषा माध्यम से की है तो क्या यह अंग्रेजी परस्त समुदाय मातृभाषा से पढ़ कर आए मेधावी बच्चों को भी स्वीकार करेगा? यदि सरकार इस समस्या का कोई समाधान नहीं निकालती तो भारतीय भाषाओं के माध्यम से तकनीकी शिक्षा दिए जाने की यह पहल निरर्थक होकर रह जाएगी।

इसलिए मेरा यह मत है कि शिक्षा और रोजगार के माध्यम की भाषा एक हो। दूसरी बात यह कि इस व्यवस्था को केवल सरकारी महाविद्यालयों तक सीमित न रखा जाए बल्कि हर जगह यह व्यवस्था होनी चाहिए। सरकार को मातृभाषा में शिक्षा व्यवस्था के साथ-साथ मातृभाषा से पढ़कर आए विद्यार्थियों के रोजगार पर भी ध्यान देना होगा। सरकारी सेवाओं में मातृभाषा माध्यम को प्राथमिकता देनी होगी, निजी क्षेत्र को भी इसके लिए तैयार करना होगा। एक बार गाड़ी चल पड़ी तो फिर सरकारी मदद के बिना भी गाड़ी चलती रहेगी। लेकिन यह कोई सरल काम नहीं है इसके लिए सरकार की इच्छा शक्ति की भी परीक्षा होगी और इसके लिए सुविचारित रणनीति भी बनानी होगी।

हिन्दी भाषी राज्यों के अतिरिक्त महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों की सरकारों को भी अपने राज्य की ग्रामीण व आदिवासी प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए अपनी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा और रोजगार के लिए खड़े होना चाहिए और प्रयास करने चाहिए। और इन राज्यों में जो वर्ग अपनी भाषा की मुखर वकालत करता है यह उनकी परीक्षा का भी समय है। देखना है कि वे किस हद तक अपनी भाषाओं को समर्थन देकर आगे बढ़ाना चाहते हैं? यह तो वक्त बताएगा कि क्षेत्रीय भाषाओं की राजनीति करने वाले असल में किस हद तक अपनी भाषाओं में शिक्षा व रोजगार के साथ खड़े होते हैं? अपनी भाषाओं को बचाने और बढ़ाने का इससे बेहतर मौका फिर शायद ही कभी मिल सके। आइए सब मिलकर इसके लिए हर स्तर पर यथासम्भव प्रयास करें।

– डा. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'

वेदविज्ञान आलोक का औचित्य

श्रद्धेय आचार्य अग्निव्रत जी ने ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण के आधार पर **'वेदविज्ञान-आलोक'** ग्रन्थ (२८०० पृष्ठ) की रचना की है। इस ग्रन्थ को तैयार करने में आचार्य श्री ने घोर परिश्रम किया है और सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं को सहन किया है। आचार्य जी का उद्देश्य इस ग्रन्थ के माध्यम से वेद में विज्ञान और वेद ज्ञान के स्रोत ईश्वर के अस्तित्व को वैज्ञानिक जगत् के सामने सिद्ध करना है। वर्त्तमान में वेद की प्रतिष्ठा को स्थापित करने का निःसन्देह यही एकमात्र प्रभावशाली मार्ग है। आचार्य जी का उद्देश्य निश्चित रूप से महान् व उच्च कोटि का है परन्तु साथ ही एक बात मस्तिष्क में तुरन्त उपस्थित होती है कि वर्त्तमान में जहाँ आधुनिक विज्ञान आश्चर्यजनक उन्नति के शिखर पर है वहाँ आचार्य के **'वेदविज्ञान-आलोक'** का कोई औचित्य या महत्व हो पायेगा? इसी बिन्दु की संक्षिप्त चर्चा चन्द पृष्ठों में यहाँ की जा रही है।

1. किसी थ्यौरी (theory) की विशेषता- किसी भी सिद्धान्त, मॉडल या थ्यौरी की निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए-

१. अधिक से अधिक घटनाओं की व्याख्या करे।

२. कम से कम परिकल्पनाओं (assumptions) पर आधारित हो

३. परिकल्पनाएँ तर्कसंगत हों।

४. भविष्य की संभावनायें हों।

५. गणितीय आधार और प्रयोग द्वारा सिद्ध हो सके।

हम उपरोक्त बिन्दुओं की दृष्टि से **'वेदविज्ञान-आलोक'** के औचित्य का मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं।

2. मूल्यांकन

१. वेदविज्ञान में सूक्ष्मतम मूलकण (elementary particles) से लेकर सृष्टि रचना तक व्याख्या की गई है।

२. सभी प्रक्रियाओं के मूल में प्रकृति के तीन गुणों (सत्व, रज, तम) में ईश्वर प्रदत्त गति को आधार माना गया है। प्रकृति को उपादान कारण (material cause) और ईश्वर को निमित्त कारण (instrumental cause) मानकर सभी क्रियाओं एवं रचनाओं की व्याख्या की गई है।

३. दो परिकल्पना-ईश्वर व प्रकृति (matter) ली गई हैं। इनका तर्कसंगत आधार यह है कि किसी भी क्रिया का कर्त्ता होना आवश्यक है अर्थात् कार्य का कारण होना अनिवार्य है।

४. इन दो आधारों को लेकर अनेक प्रकार की क्रियाओं की व्याख्या हो जाती है और वर्त्तमान की वैज्ञानिक समस्याओं का निश्चित समाधान होता है। वर्त्तमान विज्ञान की थ्यौरीज् में परिवर्त्तन होता रहता है, उसका मूल कारण यह है कि थ्यौरी की मूल संकल्पनाओं का आधार ठोस नहीं है। यदि थ्यौरी का आधार तर्कसंगत व ठोस होगा, तो थ्यौरी को बदलना नहीं पड़ेगा और जितनी भी समस्याएँ वर्त्तमान में हैं और भविष्य में हो

सकती हैं, उनका समाधान निकलता चला जायेगा।

५. किसी थ्यौरी का गणित व प्रयोग उसकी मूल परिकल्पनाओं के अनुसार निर्धारित होता है। यह तो वर्त्तमान विज्ञान भी मानता है कि गणित का प्रयोग थ्यौरी (मूल विचार) के बाद विकसित होते हैं। किसी सिद्धान्त को समझने, व्याख्या करने से पूर्व ही गणित व प्रयोग की बात नहीं आती। वेदविज्ञान को सभी दृष्टि से समझने के बाद गणित व प्रयोग भी विकसित हो सकेंगे। आरम्भ में ही बाद वाली बात को पहले रखना उचित नहीं है।

3. आधुनिक विज्ञान और वेदविज्ञान- आधुनिक विज्ञान सभी क्रियाओं (सूक्ष्म कणों से लेकर तारामण्डल, from elementary particles to galaxies) का आधार व कारण दोनों ही पदार्थों को मानता है। क्रिया भी पदार्थ में हो रही है और क्रिया का कारण भी पदार्थ ही है अर्थात् क्रिया और कर्त्ता दोनों पदार्थ ही हैं। वेदविज्ञान में क्रिया और कर्त्ता को भिन्न लिया है। क्रिया पदार्थ में हो रही है और क्रिया का कर्त्ता पदार्थ से भिन्न चेतन सत्ता है। इस मौलिक भेद के कारण क्रियाओं के स्वरूप व परिणाम में भिन्नता होना स्वाभाविक है। वेद विज्ञान में क्रिया व कर्त्ता को भिन्न मानने की वैज्ञानिकता का आधार यह है कि पदार्थ जड़ है, जड़ (inert) में अपने आप क्रिया नहीं हो सकती। यदि आधुनिक विज्ञान यह कहे कि जड़ भी कुछ परिस्थितियों के परिणामस्वरूप क्रिया कर सकता है, तो प्रश्न आयेगा कि परिस्थितियाँ कहाँ से बनी? यदि विज्ञान कहे कि परिस्थितियों के अनेक कारण हैं और उन सबको समझ पाना किसी के वश में नहीं है, तो दूसरा भौतिक प्रश्न आयेगा कि जड़ पदार्थ की परिस्थितिवश हुई क्रिया में प्रयोजन कहाँ से आयेगा, जबकि सृष्टि की सभी क्रियाओं अर्थात् रचनाओं के प्रयोजन देखने को मिलता है, तो वर्त्तमान विज्ञान इस पर निरुत्तर है।

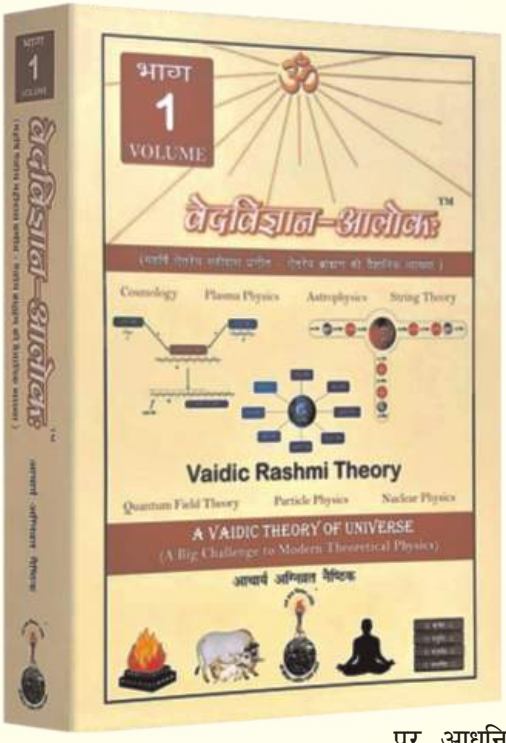

4. आधुनिक विज्ञान का वेदविज्ञान पर आक्षेप- आधुनिक विज्ञान का वेदविज्ञान पर सबसे मूलभूत आक्षेप यह है कि वेदविज्ञान ने क्रियाओं के मूल में ईश्वर को मान लिया है। वेद विज्ञान के पास इस मान्यता का तर्कसंगत आधार क्या है? विज्ञान किसी भी अस्तित्व का तार्किक आधार चाहता है या किसी अस्तित्व का प्रयोग द्वारा सिद्धान्त सिद्ध होना अनिवार्य है। यहाँ वेद विज्ञान ईश्वर की मान्यता के पक्ष में दो बातें रखता है। पहली बात विज्ञान का अपना सिद्धान्त कि स्थूल से सूक्ष्म को नहीं जाना जा सकता, तो ईश्वर का प्रयोग द्वारा सिद्ध होना सम्भव नहीं है, क्योंकि ईश्वर विज्ञान के सभी सम्भावित साधनों से सूक्ष्म है। दूसरी बात वेद विज्ञान वही कहता है, जिसको आधुनिक विज्ञान स्वयं मानता है। वह बात है कि किसी अस्तित्व का होना उसके प्रभाव से भी जाना जाता है।

फिजिकल वैक्यूम (dark matter, dark energy) फैलती गैलेक्सी (expanding galaxies) फोटोन, इलेक्ट्रॉन, विद्युत् आवेश, विभिन्न प्रकार के फील्डज् आदि को क्या विज्ञान देख, सुन, सूंघ, चख या स्पर्श कर पाया है? इनका अस्तित्व इनके प्रभाव से ही सिद्ध होता है। क्वार्क, ग्लुऑन, ग्रवीटॉन, स्पेस वक्रता (space curvature) आदि का प्रभाव भी नहीं देखा जाता, इसकी मान्यता का आधार केवल इतना ही है कि कुछ घटनाओं की व्याख्या करने में सुविधा रहती है। जब प्रभाव के आधार पर या व्याख्या के लिए उपयोग मात्र के आधार पर आधुनिक विज्ञान ढ़ेर सारे पदार्थों के अस्तित्व को मानता है और इन मान्यताओं को तर्कसंगत कहता है, तो वेद विज्ञान की ईश्वर अस्तित्व की मान्यता को, जो ढ़ेर सारी घटनाओं की तर्कसंगत व्याख्या करता है, को मान्यता न देना वा तर्कसंगत न मानने का क्या आधार है? आधुनिक विज्ञान एक तर्क और रखता है कि विज्ञान की जो मान्यतायें हैं, उनका प्रत्यक्ष-परोक्ष कुछ न कुछ गणितीय आधार भी है। ईश्वर अस्तित्व का गणितीय आधार क्या है? ईश्वर अस्तित्व से जुड़ी गणितीय बातें बहुत हैं, हम संक्षिप्त में दो तीन बातें रखते हैं।

आधुनिक विज्ञान ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता और इसके अनुसार जीवन का आरम्भ एक कोशिका के रूप में अपने आप विभिन्न तत्वों (ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, कार्बन आदि) के परमाणुओं के संयोग से हुआ। स्विस (Swiss) देश के गणितज्ञ चार्ल्स युजीन गुई ने एक गणना की। किसी भी कोशिका के साधारण से साधारण प्रोटीन अणु (molecule) में इन पाँच तत्वों (O_2, H_2, N_2, C, S) के परमाणुओं की कम से कम संख्या ४०,००० (चालीस हजार) तक होती है। पाँच प्रकार के परमाणु ४०,००० की संख्या में एक प्रोटीन अणु में एक विशेष क्रम में अपने आप जुड़ जायें इसकी गणितीय सम्भावना $१०^{९६०}$ में एक है अर्थात् सम्भावना शून्य है।

विभिन्न परमाणुओं के संयोग के लिए उनमें हलचल आवश्यक है। एक प्रोटीन अणु बनने के लिए कितने पदार्थ में हलचल हो, इसकी गणना करने पर युजीन गुई ने पाया कि पदार्थ की यह मात्रा वैज्ञानिक द्वारा निर्धारित ब्रह्माण्ड के द्रव्यमान (10^{55} किलो.) से लाखों गुणा अधिक आती है। कितने समय तक हलचल होती रहे, ताकि एक प्रोटीन अणु बन जाये तो समय की गणना का परिणाम $१०^{२४३}$ वर्ष आता है, जबकि वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड की आयु लगभग $१०^{१७}$ सैकण्ड मानते हैं। स्पष्ट है कि कोशिका के अपने आप बनने की गणितीय सम्भावना शून्य है। इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक ने (जे.बी. लीथेज) गणना की कि केन्द्रिका अमीनो अम्ल कोशिका के प्रोटीन अणुओं के एमीनो अम्लों की भिन्न-भिन्न $१०^{४८}$ प्रकार की व्यवस्था (क्रम) बन सकते हैं। तो गणित के आधार पर जीवन धारण करने वाली कोशिका का अपने आप बन जाना समभव नहीं है। कोशिका में परमाणुओं को विशेष क्रम में किसी चेतन सत्ता के माध्यम से रखा गया और जीवन को धारण करने योग्य क्रम ही लिए गए। इस चेतन माध्यम को वेद विज्ञान ने ईश्वर कहा है।

आधुनिक विज्ञान ब्रह्माण्ड स्तर पर कुल ऊर्जा शून्य मानता है। गणित के अनुसार शून्य में से शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं निकल सकता। किसी भी रचना के लिए ऊर्जा चाहिए। ऊर्जा के शून्य होने पर कुछ भी क्रिया सम्भव नहीं है। तो सृष्टि रचना शून्य ऊर्जा से सम्भव नहीं हो सकती। यह गणितीय निष्कर्ष फिर हमें किसी ऊर्जा स्रोत को मानने पर विवश करता है। इसी ऊर्जा स्रोत को वेद विज्ञान ने ईश्वर कहा।

गणित का यह भी निष्कर्ष है कि अव्यवस्था की सम्भावना व्यवस्था से सदैव अधिक होती है। तो अपने आप व्यवस्था बनना या रचनाओं का बन जाना गणित के अनुसार सम्भव नहीं है, तो रचनायें किस ने बनाई? इसी रचनाकार को वेद विज्ञान ने ईश्वर कहा है। तो वेद विज्ञान की ईश्वर सम्बन्धी मान्यता तर्कसगत भी है और इसका गणितीय आधार भी है। वेद मानव को प्रत्येक क्षेत्र का मार्गदर्शन देता है। **'वेद विज्ञान आलोक'** मुख्य रूप से भौतिकी की समस्याओं, सृष्टि रचना आदि के बारे में विस्तार से व्याख्या करता है। वेद में विज्ञान की सभी शाखाओं की मौलिक बातों की जानकारी है, जिसको निकालने की आवश्यकता है। आधुनिक विज्ञान की चमत्कारी उन्नति इसकी तकनीकी उन्नति है, न कि सिद्धान्तों की सम्पूर्णता। तकनीकी विकास के दुष्परिणाम आधुनिक विज्ञान के अधूरेपन के साक्षी हैं।

अब आधुनिक विज्ञान की थ्यौरीज् के बारे में आधुनिक वैज्ञानिकों के विचार जान लेना समीचीन रहेगा। कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

१. विज्ञान की कोई थ्यौरी शाश्वत नहीं है। आमतौर पर यह होता है कि थ्यौरी द्वारा घोषित सम्भावना प्रयोग द्वारा असिद्ध कर दी जाती है। विज्ञान की थ्यौरी का पहले विकास होता है, कुछ तथ्यों की व्याख्या की जाती है और फिर तेजी से थ्यौरी का ह्रास हो जाता है।

– अल्बर्ट आइंस्टीन

२. प्राचीन ग्रीकों की तरह हमें भी चार तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) के परस्पर सम्बन्धों का अभी तक ज्ञान नहीं हुआ है। आधुनिक थ्यौरीज् के समीकरणों का हल कुछ सीमाओं के भीतर लगभग ही किया जाता है। आधुनिक सैद्धान्तिक भौतिकी अलग-अलग खण्डों का समूह मात्र है। **- M.A Markov, Russian Scientist**

३. पाँच-छः विरोधी थ्यौरीज के पक्ष में कई तरह के तर्क दिए जा सकते हैं। – रिचर्ड फिलिप फीनमैन

४. $१०^{-९५}$ cm के कम दूरियों के भीतर केवल विचार की पहुँच ही हो सकती है। वर्तमान वैज्ञानिक उन्नति के होते हुए भी इतनी छोटी मात्राओं का अध्ययन गणित द्वारा भी सम्भव नहीं है, प्रयोग द्वारा सिद्धि की तो बात ही क्या है। – जान व्हीलर अमेरिकन वैज्ञानिक

५. विज्ञान की बहुत सारी थ्यौरीज् में कौनसी थ्यौरी सटीक बैठेगी? बहुत से प्रभाव निरस्त कर दिए जायेंगे। बचे हुए विचार किसी एक के साथ नत्थी होकर एक विचार बनायेंगे और यह भी अन्तिम होगा, कहा नहीं जा सकता। **- Stankovic**

६. थ्यौरी एक मॉडल है जो किसी मस्तिष्क में रहता है और

इसकी दूसरी वास्तविकता नहीं है। कोई भी थ्यौरी सदैव अस्थायी होती है, क्योंकि आप इसे सिद्ध नहीं कर सकते। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि थ्यौरी के प्रयोग द्वारा परिणाम कितनी बार ठीक आये हैं। आप निश्चित नहीं हो सकते कि कभी किसी प्रयोग का परिणाम थ्यौरी से विपरीत नहीं आयेगा। एक अकेला परीक्षण, जो थ्यौरी से मेल नहीं खाता, थ्यौरी को निरस्त कर सकता है।

– स्टीफन हाकिंग

७. विज्ञान में भिन्न-भिन्न स्थिरांक (constant) में सम्बन्ध नहीं है और न ही ये किसी थ्यौरी द्वारा निकाले हुए हैं।

८. गणित के सूत्र व गणनायें गणित के लिए तो ठीक हैं पर व्यावहारिक जीवन की घटनाओं का सटीक वर्णन करें यह आवश्यक नहीं है। – रिचर्ड फोरमैन

उपरोक्त टिप्पणियाँ व विसंगतियों के उदाहरण आधुनिक विज्ञान, विशेषकर भौतिकी की स्थिति व समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं। इसी स्थिति को ध्यान में रखकर **'वेदविज्ञान-आलोक'** की प्रासंगिकता पर विचार करते हैं।

वेदविज्ञान-आलोक का औचित्य- आचार्य अग्निव्रत के 'वेदविज्ञान-आलोक' ग्रन्थ का पहला औचित्य तो यह है कि आचार्य जी ने आधुनिक विज्ञान की मूल समस्याओं व मान्यताओं के सम्बन्ध में विश्व के शीर्ष वैज्ञानिक से एक सौ से अधिक प्रश्न किए हैं। पर्याप्त समय बीतने के बाद भी इन प्रश्नों का उत्तर विश्व के वैज्ञानिक नहीं दे पाये हैं। आचार्य जी केवल प्रश्न ही नहीं कर रहे, अपितु 'वेदविज्ञान-आलोक' के माध्यम से इन प्रश्नों का उत्तर देने की घोषणा भी दृढ़तापूर्वक कर रहे हैं। इससे बड़ा औचित्य किसी ग्रन्थ का क्या हो सकता है?

एक और महत्वपूर्ण औचित्य है इस वेद विज्ञान का। इसमें सन्देह नहीं कि आधुनिक विज्ञान ने आश्चर्यजनक उन्नति की है, पर इसके साथ यह भी निःसन्देह सत्य है कि विश्व में एक भी वैज्ञानिक नहीं है, जो आधुनिक विज्ञान की उन्नति के दुरुपयोग से चिन्तित न हो। विज्ञान की उन्नति का उद्देश्य मानव जीवन को अधिक से अधिक सुखी बनाना है। विज्ञान इस उद्देश्य में कितना सफल हुआ है, सबके सामने है। जैसे विश्व वैज्ञानिकों को घोषणापूर्वक उनके अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर देने की बात वेद विज्ञान कह रहा है, इससे भी बढ़कर वेद विज्ञान विश्व को विज्ञान के दुरुपयोग न होने का दावा पेश कर रहा है। वेद विज्ञान की उन्नति शतप्रतिशत कल्याणकारी होगी, विनाशकारी नहीं होगी। तीसरा औचित्य है कि यह विज्ञान वेद से लिया गया है तो इसमें अन्तर विरोध नहीं होंगे तो समय के साथ थ्यौरी को बदलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। एक और महत्वपूर्ण औचित्य यह है कि वेद विज्ञान न केवल जीवन को सुखी बनायेगा अपितु मानव जीवन को सफल भी बनायेगे। साधन की दृष्टि से भी वेद विज्ञान आधुनिक विज्ञान के मुकाबले बहुत कम साधनों द्वारा परिणाम देगा।

यह स्वीकार किया गया है कि यदि आप यह विश्वास करते हैं कि विश्व अनायास नहीं है अपितु निश्चित नियमों से चलता है, तो आपको एक निश्चित थ्यौरी विकसित करनी होगी जो विश्व की प्रत्येक घटना की व्याख्या कर सके। वेद विज्ञान ऐसी थ्यौरी देने की घोषणा कर रहा है।

यह भी सत्य है कि वैज्ञानिकों में सबसे अधिक महत्व व सम्मान उस वैज्ञानिक को मिलेगा, जो विश्व रचना के सम्बन्ध में, सबसे अधिक विचार बदलने में सक्षम होगा। निश्चित रूप से **'वेदविज्ञान-आलोक'** ऐसा करने में सक्षम है और इसके रचयिता आचार्य अग्निव्रत इस महत्व व सम्मान के अधिकारी हैं।

आचार्य अग्निव्रत जी ने विश्व के समक्ष एक कल्याणकारी विकल्प रखा है, हमें इसका लाभ उठाना चाहिए, नहीं तो केवल आधुनिक विज्ञान की उन्नति हमें सुखी कर सकेगी, यह असम्भव है। ईश्वर हमें ठीक दिशा में प्रेरित करें।

– डॉ. भूपसिंह
रिटायर्ड एसोसियट प्रोफेसर भौतिकी
भिवानी (हरियाणा)

विश्व भर से आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज दिनांक २१ मार्च २०२१ रविवार को राठौड़ (वाल्मीकि) जन कल्याण सेवा संस्थान के प्रतिनिधि मण्डल को श्री विनोद कुमार जी राठौड़ (जनसम्पर्क सचिव-न्यास) के माध्यम से श्री नवलखा महल आने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम आज तक जिन चीजों से अंजान थे वो यहाँ आकर देखा, समझा, माने कि जो स्वर्ग का नाम सुना था वो यहाँ पर हमने महसूस किया। हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को शत्-शत् नमन करते हैं जिन्होंने मानवता एवं मानव धर्म के लिए यह पवित्र कार्य किये और यहाँ से जो युवाओं को संस्कार देने के कार्यक्रम है वो देश और देशवासियों के विकास के लिए मील का पत्थर साबित होंगे। श्रीमान् चन्द्रकान्त जी भाई साहब का भी आभार। एक बार पुनः साधुवाद, आभार।

आदर सहित

लाल चन्द राठौड़	त्रिलोक चन्द राठौड़	रामचन्द्र राठौड़
महामंत्री	कोषाध्यक्ष	संगठन मंत्री

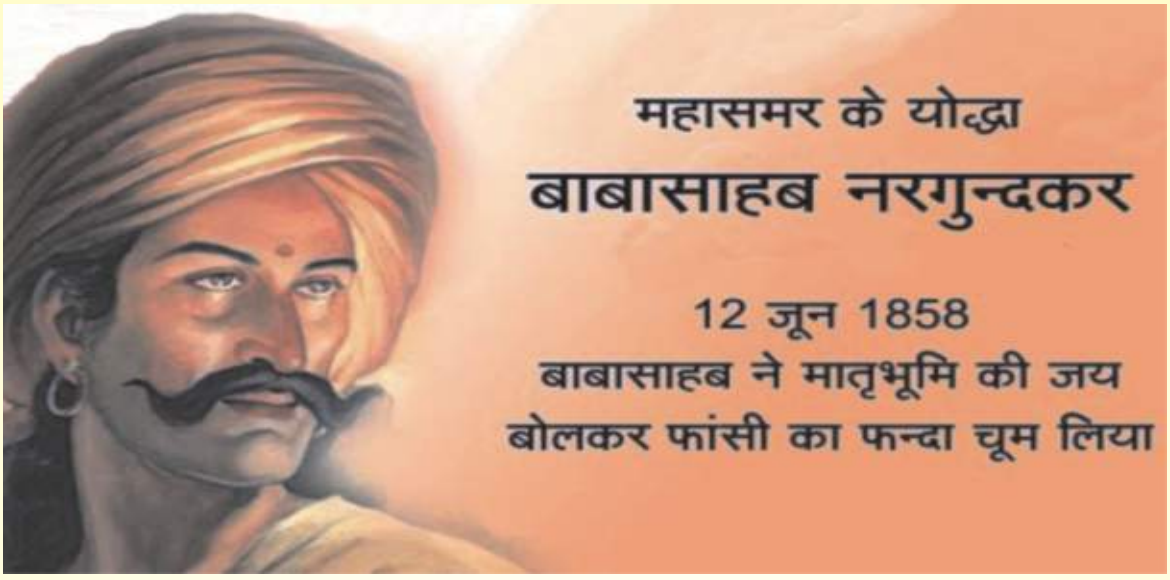

उस दिन कर्नाटक के अंचल में स्थित नरगुन्द राज्य में विषाद छा गया। नरगुंद के लोकप्रिय महाराज भास्कर राव बाबासाहब नरगुन्दकर को निराशा ही नहीं हुई, उन्हें अपमान का कड़वा घूँट भी पीना पड़ा। बाबासाहब के कोई पुत्र नहीं था। राज्य का उत्तराधिकारी निश्चित करने के लिए उन्होंने धारवाड़ के कलेक्टर तथा बेवगाँव के कमिश्नर के नाम पत्र लिखकर प्रार्थना की कि उन्हें दत्तक पुत्र की अनुमति दी जाए। उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। बाबसाहब ने बम्बई की सरकार को भी इस आशय से पत्र लिखा, पर वहाँ से भी इनकार का ही उपहार मिला। इतना ही नहीं पोलिटिकल एजेंट जेम्स मेंशन ने बाबासाहब का अपमान करने के लिए उद्दंडतापूर्ण भाषा में उन्हें एक पत्र लिखा। यह पत्र पाकर बाबसाहब तिलमिला गए और वे अपमान का बदला लेने का उपाय सोचने लगे ।

बाबाससाहब नरगुन्दकर अपने राज्य में बहुत लोकप्रिय थे। वे विद्वान्, साहसी, वीर योद्धा थे। वे विद्धानों का आदर करते थे। उन्होंने अपने महल में संस्कृत के लगभग चार हजार चुने हुए ग्रथों का संग्रह कर रखा था। उनके स्वभाव की एक विशेषता यह थी कि वे किसी की चुनौती को अस्वीकार करना नहीं जानते थे। यही कारण था कि पोलिटिकल एजेंट जेम्स मेंशन के प्रति उनके मन में विद्वेषाग्नि भड़क उठी। उन दिनों उत्तर भारत में १८५७ का स्वाधीनता समर चल रहा था। बाबासाहब ने सोचा कि यह समय अच्छा है। क्यों न दक्षिण भारत में भी यह अग्नि सुगला दी जाए ।

एक दिन बाबासाहब को मालूम हुआ कि जेम्स मेंशन पास के ही एक गाँव में ठहरा हुआ है। उन्होंने सोचा कि मेंशन से अपमान का बदला लेने के लिए यह समय अच्छा है। उन्होंने अपने ५-६ विश्वस्त वीरों के साथ जेम्स मेंशन पर धावा बोल दिया। जेम्स मेंशन भागा और एक मारुति मन्दिर में छिप गया। बाबासाहब ने उसे खोज निकाला और यह कहकर कि मारुति भगवान ने शिकार के लिए मुझे एक दानव दिया है, अपनी तलवार के वार से मेंशन का मस्तक उसके धड़ से अलग कर दिया ।

बाबासाहब ने अपमान का बदला तो ले लिया था, पर अभी ब्रितानियों को सबक सिखाना बाकी था। उन्होंने जेम्स मेंशन के कटे हुए सिर को अपने भाले की नोक में खोंसकर उसे नरगुन्द नगर में धुमाया और उसी भाले को चौराहे पर गाड़ दिया। जिससे आस-पास के गाँव के लोग भी आकर उन्हें देख सकें। पाचँ दिन तक वह सिर प्रदर्शन के लिए टँगा रहा। ब्रितानी लोग अपनी जाति के इस अपमान को कैसे सह सकते थे। ब्रितानी सेनापति मालकर ने सेना एकत्रित करके नरगुन्द पर हमला बोल दिया। पहली लड़ाई में बाबासाहब ने ब्रितानी सेना को पीछे धकेल दिया। ब्रितानियों ने अपनी सेना की संख्या बढ़ा दी।

अगले दिन बाबासाहब अपने कुछ साथियों के साथ किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के लिए किले के बाहर निकल गए। ब्रितानियों को इस बात का पता चल गया और उनका पीछा किया गया। बाबासाहब नरगुन्दकर को गिरफ्तार कर लिया गया।

बाबासाहब के ऊपर पोलिटिकल एजेंट जेम्स मेंशन का मुकदमा चलाया गया। न्यायालय ने उन्हें फाँसी का दण्ड सुनाया। १२ जून १८५८ को बाबासाहब नरगुन्दकर फाँसी पर झूलकर भारत माता की गोद में सदैव के लिए सो गए।

कथा

सरित

लाला मटोलचन्द और रामजी दास गुडवाला

प्रथम स्वातंत्र्य समर के समय देश की जनता ने तन, मन, धन से सहयोग दिया। धनाढ्य वर्ग भी इसमें पीछे नहीं रहा। उनमें से कुछ धनाढ्य ऐसे भी थे जिन्होंने भामाशाह की परम्परा को जीवन्त करते हुए अपना सारा धन स्वतंत्रता के संग्राम के लिए अर्पित कर दिया। उस काल के कुछ ऐसे भामाशाहों का जीवन परिचय प्रस्तुत लेख में दिया जा रहा है-

१० मई १८५७ के दिन मेरठ में हिन्दुस्तानी सैनिकों ने ब्रितानियों को धूल चटाकर दिल्ली को भी ब्रितानियों की गुलामी से मुक्त करने में सफलता पाई थी। बहादुरशाह जफर से उनकी व्यक्तिगत पहचान थी। लाला मटोलचन्द अग्रवाल ने एक बार बहादुरशाह जफर के समक्ष प्रस्ताव रखा था कि वे हिन्दुओं की गो-भक्ति की भावना की कद्र करके गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का आदेश दें, जिसे बहादुरशाह ने स्वीकार कर लिया था। बादशाह ने अपना एक दूत डासना भेजा। उन्होंने बादशाह का पत्र लालाजी को दिया जिसमें उन्हें दिल्ली पहुँचकर भेंट करने को कहा गया था। लाला मटोलचन्द अग्रवाल भगवान शिव के परम भक्त थे। सवेरे उठते ही उन्हेंने भगवान शिव की पूजा अर्चना की तथा प्रार्थना की कि- 'मैं देश के कुछ काम आ सकूँ, ऐसी शक्ति दो।' लालाजी रथ में सवार होकर दिल्ली पहुँचे। बहादुरशाह जफर ने सूचना मिलते ही उन्हें महल में बुलवा लिया। बादशाह ने कहा- सेठजी, हमारी सल्तनत ब्रितानियों से लड़ते-लड़ते खर्चे बढ़ जाने के कारण आर्थिक संकट में फंस गई है। हम सैनिकों का वेतन तक नहीं दे पाये हैं। ऐसी हालत में यदि आप हमारी कुछ सहायता कर सकें, कुछ रुपया उधार दे सकें, तो शायद हम इस संकट से उबर जायें। यदि दिल्ली की सल्तनत पर हमारा अधिकार बना रहा और ब्रितानियों की साजिश सफल नहीं हो पाई तो हम आपसे लिया गया पैसा-पैसा चुका देगें।'

लाला मटोलचन्द ने बादशाह के शब्द सुने तो राष्ट्रभक्ति से पूर्ण हृदय दुखित हो उठा। वे बोले- 'मैं उस क्षेत्र का निवासी हूँ जहाँ के अधिकांश ग्रामीण महाराणा प्रताप के वंशज हैं। हो सकता है कि जब वे राणावंशी राजपूत मेवाड़ से इस क्षेत्र में आकर बसे हों, तो मेरे पूर्वज भी उनके साथ आकर बस गये हों। हो सकता है कि हम लोग भामाशाह जैसे दानवीर व राष्ट्रभक्त के ही वंशज हों। अतः हमारा यह परम कर्त्तव्य है कि विदेशी ब्रितानियों से अपनी मातृभूमि की मुक्ति के यज्ञ में कुछ न कुछ आहुति अवश्य दें। आप चिन्ता न करें जितना सम्भव हो सकेगा धन आपके पास पहुँचा दिया जायेगा।'

सेठ मटोलचन्द ने डासना पहुँचते ही अपने खजाने के सोने के सिक्के छबड़ो में भरवाये तथा उन्हें रथों व बैलगाड़ियों में लदवाकर दिल्ली की ओर रवाना कर दिया। जब ये सोने के सिक्कों से भरे छबड़े लाला जी के मुनीम ने बादशाह को पेश किये तो बादशाह अपने मित्र सेठजी की दरियादिली को देखकर भाव-विभोर हो उठे। उन्होंने अपने वजीर से कहा- 'मेरे राज्य में लाला मटोलचन्द अग्रवाल जैसे महान् राष्ट्रभक्त दानी सेठ रहते हैं, इसका मुझे गर्व है।'

सेठ मटोलचन्द ने देश की स्वाधीनता के संघर्ष में अपना सारा खजाना अर्पित कर दानवीर भामाशाह का आदर्श प्रस्तुत किया। उन महान् दानी सेठ की हवेली आज भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में डासना में खण्डहर बनी हुई उस डेढ़ सौ वर्ष पुरानी गाथा की साक्षी है।

जगत् सेठ रामजी दास गुड़वाला

दिल्ली के अत्यन्त धनाढ्य व्यक्ति थे जगत् सेठ रामजी दास गुड़वाला। अपने गुड़ के व्यवसाय में इन्होने अकूत सम्पत्ति बनाई थी। ये अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह के विशिष्ट दरबारी थे। देश भक्ति से ओत-प्रोत सेठजी ने आर्थिक संकट से जूझ रहे बादशाह की कई बार आर्थिक सहायता की। उन्होंने १८५७ के स्वातंत्र्य समर के समय देश को ब्रितानियों के चंगुल से निकालने के लिये अपने सारा धन लगा दिया। सेठजी ने एक गुप्तचर विभाग का निर्माण भी किया जो ब्रितानियों तथा उनके भारतीय पिछलग्गुओं की गतिविधियों की जानकारी लाकर देता था।

जैसे ही मेरठ में क्रान्ति की चिन्गारी उठी और स्वातन्त्र्य सैनिक दिल्ली पहुँचे बादशाह ने सेठजी से सहायता माँगी। सेठजी ने अपना खजाना क्रान्तिकारी सैनिकों के लिये खोल दिया। सैनिकों की रसद आदि के लिये उनके भण्डार हमेशा खुले रहते थे।

अस्त व्यस्त नेतृत्व तथा विश्वासघातियों के कारण दिल्ली पर पुनः ब्रितानियों ने कब्जा कर लिया। ब्रिटिश सेठ गुड़वाला से धन ऐंठना चाहते थे, इसके लिए कुछ ब्रिटिश अधिकारी उनके घर पर पहुँचे। ब्रिटिश अधिकारी ने सेठजी से विनम्रतापूर्वक कहा- सेठ आप तो महान् दानी हैं। युद्ध की स्थिति के कारण हम आर्थिक तंगी में हैं, आप हमें आर्थिक सहायत करें तो ठीक रहे, आपका दिया हुआ धन दिल्लीवासियों के ऊपर खर्च किया जायेगा।'

सेठ गुड़वाला ब्रितानियों की चाल को समझ गए। उन्होंने कहा कि 'आप लोग ही मेरे देश में अशान्ति और इस युद्ध के लिए जिम्मेदार हैं। मैं क्रूर आक्रान्ताओं को धन नहीं दे सकता। आप लोगों ने नगरों को श्मशान बना डाला है। इस तरह के कुत्सित कार्य करने वालों को देने के लिये मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।'

ब्रिटिश, सेठ रामजी दास का उत्तर सुनकर अपमानित हो उस समय तो चले गये लेकिन दूसरे दिन सुबह-सबेरे ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया। ब्रितानियों ने अपनी क्रूरता दिखाते हुए गड्ढा-खुदवाकर सेठ जी को कमर तक उसमें गाड़ दिया फिर उनके ऊपर शिकारी कुत्ते छोड़ दिए। कुत्तों ने सेठजी को बुरी तरह घायल कर दिया। अत्याचारियों को इतने पर ही संतोष नहीं हुआ तथा घायल सेठजी को चाँदनी चौक में फाँसी पर लटका दिया। इस प्रकार देश का एक और भामाशाह स्वतंत्रता की बलिवेदी पर न्यौछावर हो गया।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

वेदों का पाठ पढ़ाता नवलखा महल अब हुआ हाइटेक

आर्ट गैलेरी, म्यूजियम व १६ संस्कारों के मॉडल में मिलेगा वैदिक ज्ञान का आनन्द

उदयपुर शहर के प्रमुख पर्यटन स्थल गुलाबबाग के केन्द्र में स्थित नवलखा महल अब विविध नवाचारों एवं अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार करेगा। १६वीं शताब्दी में स्थापित यह महल अब आर्य समाज और स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार का माध्यम बन चुका है। वर्तमान में इस महल के रखरखाव एवं संरक्षण का कार्य सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट के माध्यम से किया जा रहा है। इन दिनों ट्रस्ट की पहल पर इस स्थान को अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ हाइटेक बनाने का कार्य किया जा रहा है।

1882 में अगस्त माह में ही उदयपुर आए थे स्वामी दयानन्द

श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक आर्य ने बताया कि महर्षि दयानन्द, एक ऋषि और सुधारक थे, जिन्होंने वैदिक शिक्षा को भारत में प्रचारित किया। वे वेदों और शास्त्रों के गहन विद्वान् और सिद्ध योगी थे। महर्षि दयानन्द १० अगस्त, १८८२ को उदयपुर आए। उन्होंने मेवाड़ साम्राज्य के ७२वें शासक महाराणा सज्जन सिंह के अनुरोध पर झीलों की नगरी का दौरा किया। नवलखा महल कभी महाराणा का शाही अतिथि गृह था जिसे सन् १९९२ में राज्य सरकार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश न्यास को सौंप दिया गया।

उन्होंने बताया कि महर्षि २७ फरवरी १८८३ तक यानि लगभग साढ़े छह महीने तक शहर में रहे और नवलखा महल में ही प्रवास किया।। इस पवित्र नवलखा महल में, महर्षि दयानन्द ने युग प्रवर्तक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के लेखन को पूरा किया। यह सत्यार्थ प्रकाश मानव जीवन के लिए उसका प्रोटोकॉल था। उन्होंने इसे मानव जाति के कल्याण के लिए और दिव्य ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने के लिए लिखा था। मेवाड़ प्रवास के दौरान महर्षि दयानन्द को सुनने वागड़ अंचल से गोविन्द गुरु भी आया करते थे। दयानन्द से प्राप्त ज्ञान को उन्होंने अनपढ़ आदिवासियों के बीच प्रसारित किया। गोविन्द गुरु आदिवासी अंचल में सुधारवादी कार्य करते रहे।

14 अध्यायों में समाया अथाह ज्ञान

स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश में १४ अध्याय हैं। इसमें उन्होंने बाल-शिक्षा, अध्ययन-अध्यापन, विवाह और गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास-राजधर्म, ईश्वर, सृष्टि-उत्पत्ति, बन्ध-मोक्ष, आचार-अनाचार, आर्यावर्त्तदेशीय मतमतान्तर, इसाई मत और इस्लाम के बारे में अपने विचार लिखे हैं। सत्यार्थ प्रकाश मूल रूप से हिन्दी में लिखा गया था, लेकिन यह अब तक संस्कृत समेत दुनियाभर की २४ से अधिक भाषाओं में अनुदित हो चुका है। दिलचस्प है कि संस्कृत में १६२४ में लिखे जाने से पहले चार अलग-अलग लेखक इसे अंग्रेजी में लिखे चुके थे। मातृभाषा गुजराती और संस्कृत का अथाह ज्ञान होने के बावजूद महर्षि ने इसे हिन्दी में लिखा। संस्कृत छोड़कर हिन्दी अपनाने की सलाह उन्हें कलकत्ता प्रवास के दौरान केशवचन्द्र सेन ने दी थी।

ऐसा है नवलखा महल

आर्य समाज से जुड़ी सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी ललिता मेहरा ने बताया कि यहाँ एक यज्ञशाला भी है जहाँ वैदिक भजनों और वेदपाठों के साथ सामूहिक यज्ञों सहित यज्ञ प्रतिदिन सुबह और शाम किए जाते हैं। महल की पहली मंजिल में एक चित्र दीर्घा है जहाँ ६७ तेल चित्रों में महर्षि के जीवन को, उनके आध्यात्मिक ज्ञान को चित्रित किया गया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के लेखन कक्ष में एक १४-कोण और १४-मंजिल वाला 'सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ' या टॉवर भी स्थापित है। आंगन के एक तरफ एक हॉल में एक वैदिक पुस्तकालय और पढ़ने का कमरा है। सत्यार्थ प्रकाश के सभी २४ अनुवाद- इसमें संस्कृत, फ्रेंच, जर्मन, स्वाहिली, अरबी और चीनी शामिल हैं। घूमने वाले कांच के अन्दर सत्यार्थ प्रकाश और महत्वपूर्ण वैदिक ग्रन्थों को प्रदर्शित करते हैं।

थियेटर और षोडश संस्कारों के मॉडल का होगा आकर्षण

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक आर्य ने बताया कि वर्तमान में इस नवलखा महल और स्वामी दयानन्द से इसके जुड़ाव के प्रति लेकसिटी में आने वाले पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से यहाँ पर एक हाईटेक थियेटर तैयार किया गया है और बहुत ही जल्द यहाँ पर भारतीय संस्कृति में निर्दिष्ट सोलह संस्कारों की महत्ता को उद्घाटित करने के लिए विशेष मॉडल तैयार किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्टिस्ट की सेवाएँ ली जा रही हैं।

द्वारा- डॉ. कमलेश शर्मा
उपनिदेशक- सूचना एवं जन सम्पर्क, उदयपुर

समाचार

कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन गूगलमीट के माध्यम से १८७ वेबिनार सम्पन्न

अध्यात्म पथ पत्रिका के तत्वावधान में कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन गूगलमीट के माध्यम से पूरे विश्व में वेदों का डंका बजाते हुए १८७वें वेबिनार पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा- मनुष्य का जितना प्रेम स्त्री- पुरुष के परस्पर भाव में है, अथवा जितनी कामना और दीनता, प्रार्थना, धन आदि पदार्थों के लिए करते हैं यदि इतना प्रेम और इतनी नम्रता परमेश्वर के प्रति धारण करे तो अवश्य परमानन्द की प्राप्ति और संसार से रक्षा हो। श्रद्धा पूर्वक ईश्वर चिन्तन मनुष्य के मुख्य कर्तव्यों में सर्वप्रथम है। कुछ चीजें समीप जाने से बिना मांगे ही मिल जाती है। अग्नि से गर्माहट, बर्फ से शीतलता, गुलाब से सुगन्ध। ईश्वर का ध्यान करें, ईश्वर से भी निकटता बढ़ाएँ, सब कुछ बिना मांगे मिलने लगेगा। शरीर की शुद्धि के लिए स्नान, संपत्ति की शुद्धि के लिए दान एवं मन की शुद्धि के लिए ईश्वर का ध्यान आवश्यक है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल, देहरादून की आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा जी ने बताया कि ईश्वर की परमसत्ता को कण-कण में अनुभव करते हुए उसको ही अपना मित्र बनाएँ। प्रसिद्ध गायक कलाकार श्री नरेन्द्र आर्य सुमन जी, आचार्य विजय भूषण जी, श्रीमती कविता आर्या जी के मन को छू लेने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर आधारित गीत एवं ईश्वर भक्ति भजन हुए। इस भव्य कार्यक्रम में देश-विदेश के अनेक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- अश्विनी नांगिया (प्रबन्ध संपादक- अध्यात्म पथ)

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़- बढ़ते कदम

आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष एवं पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का पुनरूद्धार कर संचालन कर रहे आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री के पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण संकल्प को मूर्त रूप देने हेतु उनके सुयोग्य सुपुत्र युवा विद्वान् श्री प्रवण शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती निकिता आर्या ने अपने पैतृक गाँव निनौरा, जिला- मन्दसौर, मध्य प्रदेश के बदले ३४वाँ वेदपारायण महायज्ञ पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के प्रांगण में २३ से २५ जुलाई, २०२१ को भव्यता के साथ आयोजित किया। निनौरा गाँव के सैकड़ों आर्यजनों ने यज्ञ में भाग लिया। उनके अतिरिक्त खेड़ा निम्बाहेड़ा, छोटी सादड़ी, बड़ी सादड़ी, भीलवाड़ा, उदयपुर, जयपुर आदि स्थानों से भी उत्साही आर्यजन यज्ञ में पधारे।

यज्ञ के पहले दिन २३ जुलाई, २०२१ को गुरुकुल प्रांगण में भव्य यज्ञशाला निर्माण हेतु शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया जिसमें प्रसिद्ध दानवीर श्री दीनदयाल कोलकाता मुख्य अतिथि एवं शिलान्यासकर्त्ता के रूप में पधारे। उनके साथ अहमदाबाद से आर्य समाज के नेता श्री सुरेशचन्द आर्य भी शिलान्यास समारोह में आमंत्रित किये गये थे। सर्वप्रथम वेदमंत्रों के उच्चारण के पश्चात् श्री दीनदयाल गुप्त ने अपने कर कमलों से यज्ञशाला की नींव में शिला रखकर विधिवत शिलान्यास किया। शिलान्यास के उपरान्त श्री दीनदयाल गुप्त ने बड़ी उदारता के साथ घोषित किया कि इस यज्ञशाला का निर्माण वह अपने डॉलर फाऊण्डेशन की ओर से करायेंगे। यज्ञशाला पर होने वाला सम्पूर्ण व्यय डालर फाऊण्डेशन वहन करेगा। उन्होंने संचालन पर होने वाले व्यय की चिन्ता से मुक्त करते हुए आश्वासन दिया कि आपको गुरुकुल के संचालन में धन की कमी नहीं आने दी जायेगी।

श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने श्री दीनदयाल गुप्त द्वारा कन्या गुरुकुल के सहयोग की घोषणा से अपने आपको सम्बद्ध करते हुए कहा कि वे गुरुकुल के विकास के लिए तन-मन-धन से सहयोग करेंगे।

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मगरा पून्जला स्थित आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर के २२ वें वार्षिकोत्सव पर ८ दिवसीय वृहद् वृष्टि यज्ञ का आज पं. सेवाराम आर्य व शिवराम शास्त्री के ब्रह्मत्व में विशेष जड़ी बूटियों व औषधयुक्त गोधृत से यज्ञ आरम्भ हुआ। अथर्ववेद व ऋग्वेद के वर्षासूक्त मंत्रों की आहुति प्रदान की गई। इस अवसर पर डॉ. रामनारायण जी शास्त्री ने उपदेश देते हुए बताया कि जिस प्रकार भोजन जरूरी है उसी प्रकार मानव को शुद्ध वायु के लिए यज्ञ आवश्यक है। इस अवसर पर नरेन्द्र आर्य, सोहन सिंह, ज्ञानसिंह, दाऊलाल, रमेशचन्द्र गहलोत, शेरसिंह, महेश, करणसिंह, हेमसिंह, नरपतसिंह, श्रीमती स्नेहलता, पुष्पलता, ललिता, सरोज, नविता, अदिति, सन्तोष, मनिषा आदि गणमान्य उपस्थित थे। अन्त में प्रधान वीरेन्द्र जांगिड़ ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद व आभार जताया।

- शिवराम आर्य, मंत्री

शोक-संवेदना

श्री तेजपाल जी की सहधर्मिणी जसवन्ती देवी जी का दिनांक ८ मई २०२१ को देहावसान हो गया।

पूज्या माताजी का जीवन यज्ञमय, परोपकारार्थ यथा गौ सेवा, अनाथालय व गरीबों की सेवा में संलग्न रहा। श्रीमती जसवन्ती देवी जी मानव कल्याण के लिए, आर्य समाज की प्रगति के लिए, वैदिक सिद्धान्तों के सम्प्रेषण के लिए उदारता तथा तत्परता से जो कार्य किए उनकी सुरभि, उनके भौतिक शरीर के न रहने पर भी सदा-सदा के लिए वायु मण्डल में व्याप्त रहेगी।

दुःख के इन क्षणों में सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार को इस अपार दुःख को सहने की क्षमता प्रदान करे।- अशोक आर्य, अध्यक्ष

भूल सुधार

1. सत्यार्थ सौरभ के अगस्त अंक में, जबकि राष्ट्र स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा था, भूलवश 75वें के स्थान पर 74वें मुद्रित हो गया था। हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं।
2. सत्यार्थ सौरभ अंक अगस्त पृष्ठ 06 पंक्ति संख्या 38 पर 'वह कुन्ती के पुत्रों को डरपोक कायर कहता है' कृपया ऐसा पढ़ें।

-प्रबन्ध सम्पादक-सत्यार्थ सौरभ

हलचल

तालिबान का महिमामण्डन

'न्यूज नेशन' चैनल पर दीपक चौरसिया से बात करते हुए मुनव्वर राना ने तालिबान का महिमामण्डन किया था और कहा था कि तालिबान ने भारतीयों के खिलाफ कोई खराब कदम नहीं उठाया और उन्हें जाने के लिए नहीं कहा, लेकिन हालात बिगड़ने पर लोग आ रहे हैं। मुनव्वर राना ने कहा कि तालिबान के जुल्म को लेकर हमें परेशान होने की जरूरत नहीं है, लेकिन अफगानिस्तान के हजार वर्ष का इतिहास कहता है कि हिन्दुस्तान ने उनसे हमेशा मोहब्बत की है। यहाँ तक कि उन्होंने भगवान वाल्मीकि की तुलना तालिबान से कर डाली और कहा कि वाल्मीकि रामायण लिख देता है तो वो देवता हो जाता है, उससे पहले वो डाकू होता है। इंसान का कैरेक्टर बदलता रहता है।

मुनव्वर राना ने कहा था कि तालिबानी आतंकी नहीं हैं बल्कि उन्होंने अपने मुल्क को आजाद कराया था। इस पर गीतकार मनोज मुंतशिर ने भी अपनी आपत्ति जताई थी और कहा था- 'फिर तो आजाद कश्मीर की माँग करने और वादी में बेगुनाहों का खून बहाने वाले भी आतंकवादी नहीं हैं। राना साहब, मजबूर कर रहे हैं आप कि मैं अपनी लाइब्रेरी से आपकी किताबें हटा दूँ। बाज आ जाइए!'

देश में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है जो तालिबान का महिमामण्डन कर रहे हैं। कई मुस्लिम धर्मगुरु और नेता तालिबान की प्रशंसा करते फूले नहीं समा रहे हैं, ऐसे में लोकप्रिय कवि कुमार विश्वास ने ट्वीट करके ऐसे लोगों को लताड़ लगाई है।

विश्वास ने ट्वीट करके कहा- 'ज्यादा दिमाग न लगाइए। अगर पड़ोस के घर में मची अफरा-तफरी के कारण, जिन्दगी भर आपसे इज्जत पाने वाले और आपके घर में रह रहे, बदबूदार सोच से भरे किसी जाहिल शख्स का पर्दाफाश हो रहा है तो शोक नहीं, शुक्र मनाइए कि दो पैसे की प्याली गई (वो भी पड़ोसियों की), पर कुत्ते की जात पहचानी गई।'

हालांकि विश्वास ने अपने ट्वीट में किसी का नाम नहीं लिया लेकिन सोशल मीडिया यूजर इसी बहाने शायर मुनव्वर राना को निशाने पर ले रहे हैं। कई यूजर्स का मानना है कि कुमार विश्वास ने बिना नाम लिए मुनव्वर राना के लिए ही यह बात कही है। – साभार- ऑप इण्डिया

व्यर्थ पुष्पों से नर्सरी तैयार

मन्दिर में पूजा के लिए आमतौर पर फूल चढ़ाए जाते हैं। वहीं, सावन महीने में बेल पत्र आदि चढ़ाकर, पूजा की जाती है। मन्दिरों में, अगर आपने ध्यान दिया हो तो एक मूर्ति पर कितने सारे फूल चढ़ाए जाते हैं। लेकिन क्या कभी आपने सोचा है, इन फूलों का आखिर होता क्या है? महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है कि इन फूलों के मुरझाने और सड़ जाने से बदबू फैलती है और यह

बिलकुल सत्य है। दिल्ली के एक वकील देवराज जी अग्रवाल ने अपने पुरुषार्थ से इस समस्या को भी वरदान में बदल दिया वे कहते हैं कि भगवान पर चढ़ाए फूलों से मन्दिर के पुजारी भी परेशान रहते थे। तभी मैंने सोचा कि क्यों न इनका उपयोग पौधे लगाने में किया जाए।

देवराज ने मन्दिर के प्रसाद वाले फलों के बीजों, आम की गुठलियों और फूलों आदि को मिट्टी में उगाकर देखा। उन्होंने देखा कि कई फलों और फूलों के पौधे आराम से उगने लगे। जिससे उन्होंने पूरे मन्दिर प्रांगण को हरा-भरा बना दिया। इस तरह धीरे-धीरे मन्दिर में उनकी छोटी सी नर्सरी शुरू हो गई। वह पौधे लगाने के लिए गमले भी बाहर से नहीं खरीदते हैं। बल्कि घर के बेकार प्लास्टिक, जैसे- दूध, नमकीन और राशन के पैकेट्स को उपयोग में लाते हैं।

देवराज ज्यादातर फलों और फूलों के पौधे लगाते हैं, क्योंकि उन्हें इनके बीज आसानी से मिल जाते हैं। वह जामुन, आम, चीकू और गेंदे के फूल समेत कई पेड़-पौधे लगाते रहते हैं। वह अपने घर का गीला कचरा भी अब इन पौधों को उगाने में इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने अपने इस काम को 'माँ भारती शृंगार' का नाम दिया है। वह अपने जन्मदिन या अपने परिवार वालों के जन्मदिन पर लोगों को पौधे देते हैं। ताकि ज्यादा से ज्यादा हरियाली फैल सके। उनका मानना है- 'हमारे जन्म पर जिस तरह हमारी माँ को खुशी होती है, उसी तरह जब धरती पर नए पौधों का जन्म होता होगा, तो धरती माँ को भी खुशी होती होगी। इसलिए हमारी एक जिम्मेदारी धरती माँ को हरा-भरा बनाए रखने के प्रति भी है।'

– संपादन- अर्चना दुबे

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०५/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०५/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर, श्री फूलसिंह यादव; मुरादनगर, डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ 26 पर अवश्य पढ़ें।

योग के अंग

यम-नियमों का अति संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है:-

यम पाँच हैं-

१. अहिंसा- उपासक किसी से वैर न रखे, सर्वदा सबसे प्रीति करे। वस्तुतः मनसा-वाचा-कर्मणा किसी प्राणी को कष्ट पहुँचाना ही नहीं अपितु उसकी भावना तक का मन में न आने देना अहिंसा है।

उपासना का लाभ

अग्ने नय सुपथ रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम॥

- यजु. ४०/१६

जो सच्चे भाव से परमेश्वर की उपासना करते हैं और शक्ति के अनुसार उसकी आज्ञा का पालन करते हैं तथा परमात्मा को सबसे अधिक सत्कार करने योग्य मानते हैं, उनको दयालु ईश्वर पापाचरण के मार्ग से पृथक् करके, धर्मयुक्त मार्ग में चलाकर और विज्ञान प्रदान करके धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को सिद्ध करने में समर्थ करता है। इसलिये सब लोग एक अद्वितीय ईश्वर को छोड़कर किसी की उपासना कभी न करें।

२. सत्य- सदा सत्य बोले, कभी मिथ्या न बोले। जैसा अपने ज्ञान में हो वैसा ही मानना, कहना और करना सत्य कहाता है।

३. अस्तेय- जो वस्तु निज के स्वामित्व में नहीं है उसका उसके स्वामी की अनुमति के बिना ग्रहण करना स्तेय है। अतएव दूसरों के पदार्थों के प्रति आसक्ति न रखना अस्तेय है। इस प्रकार उपासक चोरी की भावना का पूर्ण त्याग करे।

४. ब्रह्मचर्य- उपासक जितेन्द्रिय हो। किसी भी इन्द्रिय की उसके विषय में प्रवृत्ति को न उभरने देना ही ब्रह्मचर्य की साधना में सहायक होता है। ब्रह्मचर्य का पालन न करने वाले को आत्म साक्षात्कार कभी नहीं हो पाता है। (मुण्ड. ३/१/५)

५. अपरिग्रह- न्यूनतम आवश्यकताओं से अधिक भोग्य पदार्थों के संग्रह में तनिक भी रुचि न रखे। अनावश्यक संग्रह में लगा व्यक्ति लालच और कभी न पूरी होने वाली तृष्णा के दलदल में फंसता चला जाता है तब उसे प्रभु-मिलन का अवकाश कहाँ? इसके अतिरिक्त परिग्रह से उत्पन्न अभिमान उसे परमात्मा से दूर कर देता है। अतः उपासक को अपरिग्रही होना अत्यन्त आवश्यक है।

नियम- नियम भी पाँच हैं।

१. शौच- अर्थात् पवित्रता। पवित्रता शरीर तथा मन दोनों की आवश्यक है। अपवित्र मन प्रभु मिलन में बाधक है। अतः मद, मात्सर्य, राग, द्वेष आदि विकारों से दूर रह मन को स्वच्छ रखना चाहिये।

२. सन्तोष- धर्मपूर्वक, पुरुषार्थ पूर्वक कर्म करने के उपरान्त जीवन निर्वाह हेतु जो अपेक्षित साधन प्राप्त हों, उनमें प्रसन्न रहना संतोष कहलाता है। अधिक और अधिक की तृष्णा से युक्त मनुष्य प्रभु मिलन की राह का पथिक नहीं बन सकता

३. तप- जीवन में सुख दुःख आते ही रहते हैं। इनको सहन करते हुए सदैव धर्म का ही अनुष्ठान करे, अधर्म का नहीं। यही तप है।

४. स्वाध्याय- सदैव सत्य शास्त्रों को ही पढ़े और पढ़ावें। सत्पुरुषों का संग करे तथा परमात्मा के मुख्य और निज नाम 'ओ३म्' का अर्थ विचारपूर्वक नित्य प्रति जप किया करे।

यम नियम आवश्यक

गम्भीरेण न उरुणामन्त्रिन् प्रेषो यन्धि सुतपावन वाजान्।
सीा ऊ षु ऊर्ण्व ऊती अरिषण्यन्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम्॥

- ऋग्वेद २/२४/१

जो यह नियमों से युक्त होकर कार्यसिद्धि के लिये दिन रात प्रयत्न करें तो वे श्रेष्ठ बन जाते हैं।

५. ईश्वर प्रणिधान- अपने आत्मा को ईश्वर की आज्ञानुकूल समर्पित कर देना ईश्वर प्रणिधान है।

योग-साधना द्वारा परमात्म-साक्षात्कार के अभिलाषी जन को यम नियमों के अभ्यास से स्वयं को परमेश्वर की उपासना का अधिकारी बनाना होगा। इनमें से एक की भी उपेक्षा योगी को हानि पहुँचा सकती है।

इस पूर्व तैयारी के पश्चात्, परमात्मा से मित्रता करने की पात्रता स्वयं में उत्पन्न करने पश्चात्, एकान्त शुद्धदेश में जाकर के योगाभ्यास करना चाहिये।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

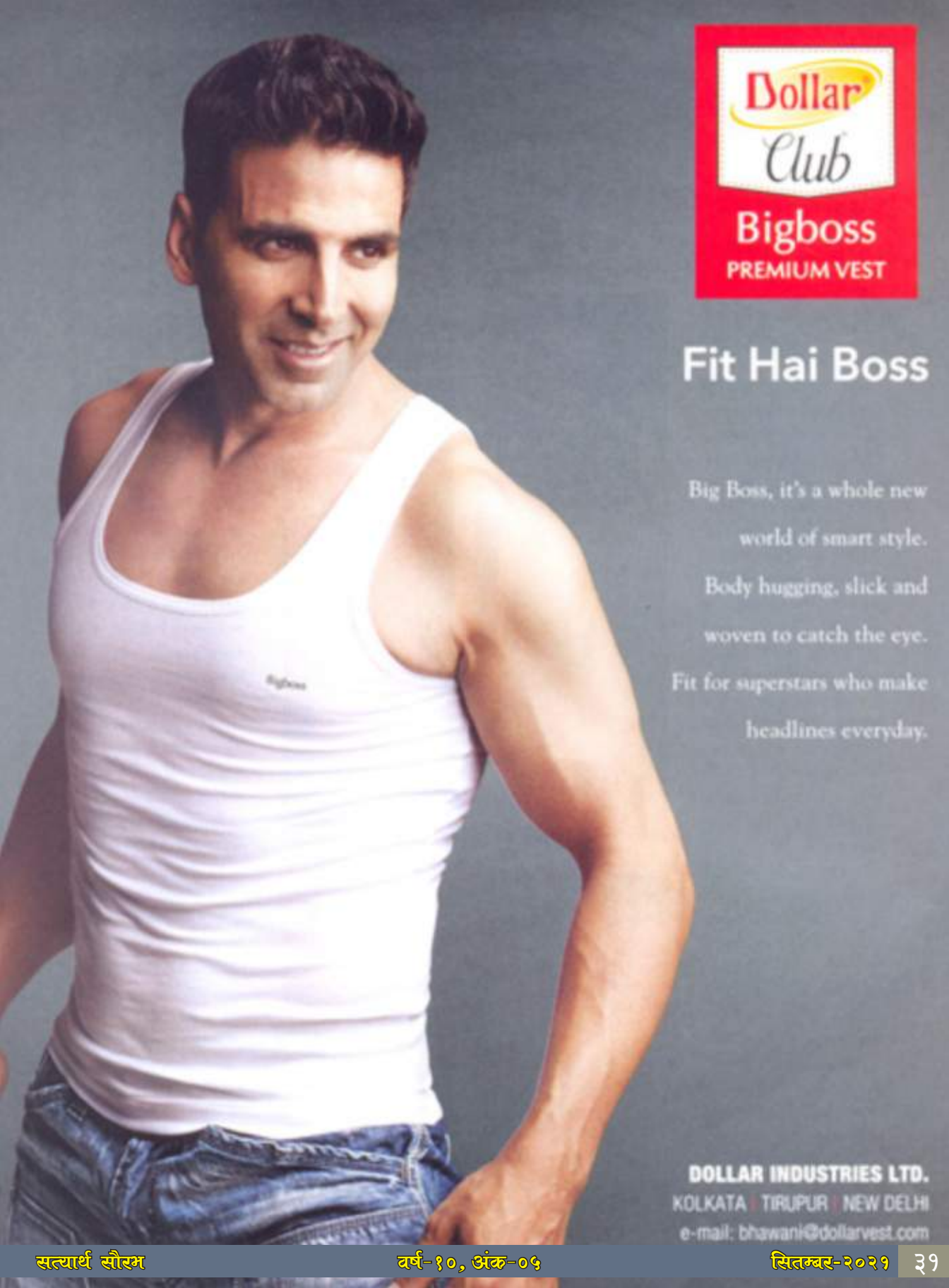
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new world of smart style. Body hugging, slick and woven to catch the eye. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

हम तो यही मानते हैं कि सत्यभाषण, अहिंसा, दया आदि शुभ गुण सब मतों में अच्छे हैं और बाकी वाद, विवाद, ईर्ष्या, द्वेष, मिथ्याभाषणादि कर्म सब मतों में बुरे हैं। यदि तुमको सत्य मत ग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो।

- सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्दश समुल्लास पृष्ठ ५८४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा मठल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर